भ्रमण : एक अनुभव

7 फरवरी 2020, एक ऐसा दिन जिसका गोवा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के विद्यार्थियों ने बड़ी ही बेसब्री से इंतजार किया। क्योंकि यही वह दिन था जब आखिरकार हम सब बनारस जाने वाले थे।

गोवा विश्वविद्यालय में, जब पहली बार मैं दाखिला लेने आई थी, उसी दिन भ्रमण भी एक विषय है जो हमारे पाठ्यक्रम में लगाया गया है, यह जानकारी मुझे मिली थी। शायद उसी दिन से मैं भ्रमण के लिए तैयार थी। तब ना तो जगह और ना ही वक्त तय किया गया था, कि आखिर कब जाएंगे पर मुझ में उत्सुकता इतनी थी कि मैंने पहले ही मेरे मन को राजी कर दिया था ।

पहले सेमेस्टर के खत्म होते-होते भ्रमण विषय जो अगले सेमेस्टर में है उसके लिए हमें बनारस ले जाएंगे यह अफवाह विभाग के विद्यार्थियों में फैलने लगी। जैसे ही पहले सेमेस्टर की परीक्षा खत्म हुई और दूसरे सेमेस्टर की शुरुआत हुई तो पहले ही दिन भ्रमण के लिए बनारस जाने की जो अफवाह ने उधम मचा रखा था, वह सच साबित हुए । शिक्षकों ने यह सूचना विद्यार्थियों में प्रसारित कर दी।

इस खबर से पूरी विभाग के विद्यार्थियों में बवाल मच गया। द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी तो भ्रमण के लिए तैयार थे लेकिन अब सवाल खड़ा हुआ था प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों पर, कि क्या प्रथम वर्ष के विद्यार्थी भ्रमण विषय लेंगे? क्या वे बनारस भ्रमण के लिए जाना चाहते हैं भी या नहीं?

इस खबर को सुनते ही काफी विद्यार्थियों ने प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने भ्रमण को जाने से इंकार कर दिया था। उनका कहना था, कि उन्हें इस सेमेस्टर में कुछ अलग पढ़ने की जरूरत थी। वह उपन्यास साहित्य पढ़ना चाहते थे और जो यह दो क्रेडिट का भ्रमण पेपर था, वह उन्हें नहीं चाहिए था। फिर एक दूसरे को बहलाना फुसलाना शुरू हो गया। जो दोस्त जा रहे थे फिर अपने वह दोस्त जो नहीं जाना चाहते थे, उनको बेहलाना शुरू कर दिया। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के साथ बातचीत शुरू हो गई इस विषय पर, कि आखिर विद्यार्थी क्यों जाना नहीं चाहते। जो भी उनके ना आने के कारण थे, जो भी परेशानी थी भ्रमण विषय को लेकर, वह हल की गई। जितना भी जरूरी सूचनाएं थी भ्रमण विषय को लेकर वह सब उन्हें बताई गई। फिर काफी कुछ विद्यार्थी, जो नहीं आना चाहते थे, सब कुछ जान कर ,सब कुछ समझ कर भ्रमण विषय को लेने के लिए तैयार हो गए। द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी तो पहले से ही भ्रमण के लिए तैयार थे लेकिन अब प्रथम वर्ष के सारे विद्यार्थी केवल दो विद्यार्थियों को छोड़कर भ्रमण विषय के लिए तैयार हो गए। उसी दिन से भ्रमण की तैयारी विद्यार्थियों में शुरू हो गई थी।

जैसे जैसे दिन बितने लगे वैसे वैसे ही विद्यार्थियों में बनारस को लेकर कुछ अफवाहें तो कुछ सूचना है फैलने लगी। एक सूचना प्राप्त हुई कि जनवरी में ही बनारस के लिए रवाना हो जाएंगे और इसी बात की वजह से, यह भी अफवाह फैलने लगी कि जनवरी के दौरान वहां ठंड बहुत ज्यादा होगी। इसके वजह से हमें गर्म कपड़े वगैरह लेना होगा तो विद्यार्थियों में शॉपिंग जो है वह उसी दौरान शुरू हो गई थी । गर्म कपड़े जूते मोजे यह सब लेना शुरु हो गया था।

लेकिन जनवरी तक आते-आते यह पता चला कि जनवरी में बनारस नहीं जाएंगे क्योंकि टिकट जो है वह कंफर्म नहीं हो पाई थी। उसके कुछ दिनों बाद ही जल्दी पता चल गया कि फरवरी में बनारस के लिए हम सब भ्रमण करने जा रहे हैं। यह बात पता चलते ही विद्यार्थियों में तैयारियां जो है वह जोरों शोरों से शुरू हो गए।

जैसे ही बनारस की बात की जाने लगी वैसे ही सब विद्यार्थियों में भी उथल पुथल मचने लगी।जैसे ही पता चला कि बनारस में जो होटल बुक करवाया गया है, उसमें एक कमरे में 3 विद्यार्थी रह सकेंगे । तब इस बात पर भी हलचल मचने लगी कि आखिर कौन कौन एक कमरे में रहेगा।

जैसे ही बनारस जाने के दिन नजदीक पहुंचने लगे वैसे ही कक्षा के, विभाग के व्हाट्सएप ग्रुप पर भी चर्चा होने लगे। एक व्हाट्सएप ग्रुप तो खास इसलिए बनाया गया ताकि यह जान सके कि आखिर कौन किस तरह के बैग बनारस लेकर जाने वाला है। एक विभाग का भी ऑफिशल व्हाट्सएप ग्रुप बनाया गया। उसके साथ ही अपने मित्रों के साथ मिलकर भी एक बनारस के लिए अलग से व्हाट्सएप ग्रुप में बनाया गया और जो उत्सुकता विद्यार्थियों में थी वह व्हाट्सएप ग्रुप पर भी हमें देखने मिल गई।

शुरू में तीन तरह के व्हाट्सएप ग्रुप बने । पहला था, बनारस कॉलिंग जो केवल प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों का था। दूसरा था, पूरे विभाग के विद्यार्थियों के लिए जो था वाराणसी स्टडी टूर और तीसरा था टूर चले हम।

7 फरवरी कंफर्म हो गया कि हम जाने वाले हैं बनारस के लिए। लेकिन एक दुखद घटना ,यह हमारे साथ घटी हमें पता चला कि 4 और 5 फरवरी को हमारी ISA रखी गई है। जहां विद्यार्थियों में बनारस जाने के लिए उत्सुकता जाग उठी थी, वहां यह खबर सुनते ही सब में एक मायूसी छा गई थी ।क्योंकि इस दौरान सभी विद्यार्थियों का मन बनारस के लिए कपड़े खरीदने में ,पैकिंग करने में लगा हुआ था। लेकिन जैसे ही यह खबर सुनी तो सभी लोगों के होश उड़ गए। किसी ने भी नहीं सोचा था कि बनारस जाने से एक दिन पहले ही हमें हमारी परीक्षा जो है वह देने होंगे।ऐसे वक्त में जहां पर हमारा पूरा ध्यान बनारस पर केंद्रित था ,वहां परीक्षा पर अपना ध्यान केंद्रित कर पाना बहुत ही मुश्किल हो रहा था।सभी विद्यार्थियों में यही चर्चा होने लगी कि आखिर बनारस जाने से पहले ही ,एक दिन पहले ही क्यों परीक्षा रखी गई है ? बनारस जाकर आने के बाद अगर रखी जाती तो ज्यादा बेहतर होता ऐसा विद्यार्थियों का मत रहा। 4 और 5 तारीख परीक्षा का दिन, 1 दिन में दो परीक्षा और जहां विद्यार्थियों में परीक्षा के बारे में चर्चा होनी चाहिए वह विद्यार्थियों में बनारस को लेकर चर्चा की जाने लगी।

परीक्षा हमारी खत्म हुई और 6 तारीख के दिन कोई भी गोवा विश्वविद्यालय नहीं गया क्योंकि सभी लोग अपने बनारस जाने के लिए भ्रमण के लिए तैयारियों में व्यस्त थे। जैसे कि पहले बताया गया है कि एक व्हाट्सएप ग्रुप कौन किस तरह कपड़े लाने वाला इसके लिए खास किया गया था, तो उस ग्रुप में अपने अपने बैग का फोटो निकाल कर भेजा जाने लगा। कौन, कितनी बड़ी और किस तरह की बैग लाने वाला है और उस हिसाब से सभी लोग अपनी पैकिंग शुरू करने लगे थे। हुआ यह कि दूसरों की बैग देखकर मैंने भी तय कर लिया कि मैं एक छोटी बैग लेकर जाऊंगी, लेकिन जैसे ही उसमें कपड़े भरने लगी तो, वह बैग मुझे छोटी लगने लगी। इसके कारण मैंने और एक दूसरी बैग ले ली उसमें भर के कपड़े और एक बैग मेरी बन गई थी ।

इन बैगों के साथ और एक बैग होने वाली थी , वह मेरी खाने के लिए जो वस्तुएं हमें लेकर जानी थी। क्योंकि ट्रेन में हमें 3 दिन का सफर करना था और ट्रेन का कुछ खाना हमें ठीक नहीं लगा। इसलिए, हमने सोचा था कि हम ट्रेन में खाने के लिए घर से ही ले जाएंगे खाने की वस्तुएं। इस सोच ने भी परेशान कर दिया था कि अब मेरे कपड़ों के ही 3 बैग हो रहे हैं, तो अब मैं खाने की वस्तुएं कहां रखूं। फिर मेरे मन में यह भी ख्याल आया, मैं यहीं से ट्रेन चार बैग लेकर का रही हूं तो आते वक़्त खरीदारी करने के बाद मेरे और कितने बैग हो जाएंगे। और यह सारे बैग उठा पाना मेरे लिए संभव नहीं हो पाएगा। जहां अगले दिन सुबह निकलने वाले हैं उसी रात को 12:30 बजे मैंने अपने जितने भी कपड़े एक बैग में भरकर रखें थे वह सब निकालें दूसरी बड़ी वाली बैग में भर दिए और

जहां मेरी तीन तीन बैग हो रहे थे वहां पर सब मैंने एक बैग में सारे कपड़े भर दिए थे और एक बैग मैंने कॉलेज की मेरी ले ली थी जिसमें मैंने खाने की वस्तुएं और साथ ही जो भी चीजें मुझे ट्रेन में लगने वाली थी ,उस सफर के दौरान उस में रख दी ताकि मुझे बार-बार ट्रेन में बड़ी वाली बैग खोलने की दिक्कत ना हो। जैसे तैसे यह आखिरी रात बीत गई । सुबह हो गई और आ गया 7 फरवरी का वह दिन जिसका हम सभी ने बेसब्री से इंतजार किया था। हमारी ट्रेन जो गोवा से मुंबई जाने वाली थी वह 10:00 बजे पहुंचने वाली थी। 10:00 बजे ट्रेन है, इसका मतलब हमें उससे थोड़े पहले पहुंचना था। इसीलिए हम सभी लोगों ने यह सोचा था कि हम कुछ वक्त पहले ही वहां पर पहुंच जाएंगे। यह हमारे बीच में बात हुई कि समीक्षा जो है वह मुझे लेने के लिए मेरे घर आ जाएगी। ठीक 8:30 बजे समीक्षा मुझे लेने के लिए आ गई और 8:45 के दौरान हम रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए। रेलवे स्टेशन पर फिर हमारे सभी दोस्त आ गए और हम सब ट्रेन का बेसब्री से इंतजार करने लगे । दक्षिण गोवा से आने वाले विद्यार्थिों से हमें सूचना मिली कि मडगांव से ट्रेन निकल चुकी है। अब हम थिविम रेलवे स्टेशन पर रुके विद्यार्थी जिस प्रकार से चातक पक्षी वर्ष के पहली बूंद का इंतजार करता है , हम भी कुछ उसी तरह से ट्रेन का बेसब्री से इंतजार करने लगे।

ठीक 10:00 बजे ट्रेन आ गई और सभी विद्यार्थियों उत्सुकता के साथ जल्द से जल्द ट्रेन में चढ़ गए।मैं और मेरे पांच दोस्तों ने यह सोचा था, कि हम एक ही डिब्बे में जो 6 सीट ट्रेन में साथ में आ जाती है, हम उस में चढ़कर बैठ जाएंगे ।और इसी खुशी से अपना सामान लेकर जब ट्रेन में चढ़े तब हमें बताया गया कि जहां जगह वहां बैठ जाओ। फिर पता चला , कि एक ऐसा कोई भी डिब्बा नहीं है जिसमें 6 सीट एक साथ हमें खाली मिल जाए और हमें जहां जहां जगह थी वहां बैठने का आदेश दिया गया। और फिर द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी जिन्होंने मडगांव रेलवे स्टेशन पर ही अपनी सीट पकड़ कर बैठ गए थे , उन्होंने हम दोस्तों को अपनी जगह दे दी और वह दूसरे डिब्बे में जाकर बैठने के लिए तैयार हो गए । और आखिरकार जिस तरह से हमने सोचा था कि हम 6 दोस्त एक साथ बैठ जाएंगे हमें वैसे

ही जगह मिल गई।

ट्रेन में चढ़ने के बाद टीसी आए और उन्होंने हमारी टिकट की तलाशी ली। उसके बाद अपना सामान एक जगह पर लगा कर हम अपने दोस्तों से मिलने के लिए रवाना हो गए। कौन, कहां बैठा है ,किस तरह से बैठा है, किसके साथ बैठा है यह देखने की उत्सुकता थी। वह सभी में जाग उठी थी और सभी अपने दोस्तों से मिलने के लिए बेचैन होते थे।सबसे मिल जुल कर फिर सब अपने ही जगह पर जाकर बैठने लगे ।फिर शुरू हो गया हमारा फोटो निकालने का वक्त जहां पर सभी विद्यार्थी अपने अपने फोटो खिंचवाने लगे। कुछ ट्रेन के खिड़की के पास बैठकर तो कुछ अलग अलग ढंग से। दो-तीन घंटे तो हमारे फोटो निकालने में ही बीत गए।

खाना, गाना ,बजाना, हंसना, खेलना इस तरह इन सभी कार्यों में हमारा वक्त कैसे बीतने लगा कुछ समझ में ना आने लगा ।जैसे से शाम होने लगी यात्रियों की संख्या डिब्बे में बढ़ने लगी। जिन जगहों पर कोई बैठा नहीं था इसीलिए जहां हमारे विद्यार्थी जाकर बैठ गए थे ,अब उन सीट पर जो यात्रीगण बैठने वाले थे वे आ गए थे। जिसके कारण हम विद्यार्थियों को वहां से उठना पड़ने लगा ।

फिर भी धीरे-धीरे समय बीतता चला गया और रात 9:30 बजे या फिर लगभग 10:00 बजे हम मुंबई आखिर कार पहुंच ही गए।

मुंबई पहुंचते ही झट से हमें ट्रेन से उतरना था ।हमसे कहा गया था कि हमें झट से अपना सामान लेकर उतरना पड़ेगा । हम सब न जाने कैसे इतनी जल्दी ट्रेन से उतर भी गए । उस प्लेटफार्म से जहां पर हम उतरे थे ,वहां से दूसरी तरफ वाले रेलवे स्टेशन तक जाना था और यह एक सबसे बड़ी चुनौती थी ,जो हमारा इंतजार कर रही थी ।पहले तो लगा कि बहुत आसान होगा लेकिन जब सामान लेकर, हम प्लेटफार्म की ओर से उस ओर जाने लगे तब सब की हालत खराब हो गई । चलना होता तो आसान होता लेकिन सामान के साथ चलना वह भी पूरे दिन के इतने लंबे सफर के बाद आसान नहीं था । हमारे छक्के तो तभी छूट गए लेकिन जैसे तैसे हम एक बार रेलवे स्टेशन की और बढ़ ही गए। अब हमारे लिए खड़ी थी एक और चुनौती, वह हमें एक लोकल ट्रेन में चढना था । लोकल ट्रेन केवल 30 सेकंड के लिए रुकती हैं और 30 सेकेंड के अंदर हम सबको अपने सामान के साथ चढ़ना है । यह हमारे लिए एक सबसे बड़ी परेशानी और एक सबसे बड़ी चुनौती थी। सब लोग इसी बात से हैरान परेशान थे कि आखिर 30 सेकेंड के अंदर हम सब कैसे उस ट्रेन में चढ़ेंगे। सब लोग प्लेटफार्म के पास आकर खड़े हो गए और सभी ने यही सोचा कि झट से ट्रेन में चढ़ना होगा।

जैसे ही पता चला कि ट्रेन आने वाली है, हम सब एक कतार में खड़े हो गए ताकि हम झट से उस ट्रेन में चढ़ सके ।लेकिन जैसे ही ट्रेन नजदीक नजदीक आने लगी हमें पता चला कि वह ट्रेन हमारी है ही नहीं और हम थोड़ा पीछे हो गए। लेकिन जैसे ही ट्रेन वहां रुकने लगी, तब हमें पता चला कि आखिर यही हमारी ट्रेन है और हमें इसी में चढ़ना है । इस गड़बड़ाहट में हम सब जल्द से जल्द चढ़ने के लिए तैयार हो गए। लेकिन हुआ यूं कि जहां हमें महिला डब्बे में चढ़ना था, हम अपंग डब्बे में चढ़ने वाले ही थे कि वहां के लोगों ने हमें कह दिया कि तुम इस डिब्बे में नहीं जा सकते हो। जो सामान चढ़ाया था उस डब्बे में सामान को लेकर हमें महिला डिब्बे में चढ़ना पड़ा और यह भी पूरे 30 सेकंड में ।

ट्रेन में यह खबर भी लगी हमारी विभागाध्यक्ष जी, हमारे डिब्बे में है ही नहीं और इस खबर ने एक सनसनी मचा दी ।सब हैरान परेशान हो गए लेकिन कुछ वक्त के लिए यह भूल कर हमें फिर से जो ट्रेन अगले रेलवे स्टेशन यानी कि दादर में रुकने वाली थी ,वह भी केवल 30 सेकेंड ही रुकने वाली थी। इस बार हमें 30 सेकंड में अपना सामान लेकर उतरना तो था ही लेकिन केवल इस बार हम नहीं थे बल्कि उस डिब्बे में बैठे और भी यात्री थे जिन्हें उसी समय में उतरना था ।तो यह एक बहुत बड़ी परेशानी खड़ी हुई थी ।जैसे तैसे ही उसे धक्का देकर हम किसी तरह से रेलवे स्टेशन पर उतर गए और सब लोग एक जगह पर जाकर खड़े हो गए। वहां पर पहुंचते ही एक और सनसनीखेज खबर हमें मिली। हमारी एक सहपाठी पुराने रेलवे स्टेशन पर ही छूट गई है और इस घटना ने

कोहराम मचा दिया। सब हैरान परेशान हो चुके थे ।सबके चेहरे पर निराशा छा गई थी ।यह समझ नहीं आ रहा था आखिर वह अकेली है या कोई है उसके साथ, किस तरह से उसके पास पहुंचा जा सकता है। यही डर सबके दिलों में मंडरा रहा था ।मुंबई एक ऐसा शहर जहां पर हम सब पहली बार आए हैं ।एक साथ आए हैं और एक भी साथी का छूट जाना एक भयावह स्थिति बन जाती है। मुंबई जैसे शहर में जहां पर यह खबरें मिलती है कि महिलाओं के साथ घिनौनी घटनाएं होती है ,इस सत्य ने हमारे दिल में और ज्यादा दहशत फैला दी थी । देखते ही देखते पता चला कि रतिका वापस आ चुकी है और उसके साथ हमारी विभाग के अध्यक्ष भी हैं। फिर पता चला कि रत्तीका रेलवे स्टेशन पर छुट्टी नहीं थी बल्कि वह ट्रेन में चढ़ रही थी, इतने में ही ट्रेन छूट गई ।और वह ट्रैक पर गिर सकती थी और मैडम जी को भी उनके साथ वहां रहना पड़ा । दिल में आ गया था हमें लोकमान्य तिलक रेलवे स्टेशन पर जाना था जहां से हमारी अगली ट्रेन बनारस के लिए हमें पकड़नी थी और हमें बताया गया था कि 1:00 बजे ट्रेन है। लेकिन अब जाना हमारे लिए आसान नहीं था। सब लोग गए थे और हमारे सहपाठी के साथ जो घटना घटी उसके बाद कोई भी ट्रेन में सफर करने के लिए राजी नहीं था । इसीलिए फिर सब ने निर्णय लिया कि हम जो अगला रेलवे स्टेशन है लोकमान्य तिलक वहां तक पैदल ही जाएंगे।

चांदनी रात, दोस्तों का साथ ,ठंडी हवाएं ,नया शहर। मुंबई सपनों की नगरी उसमें हम प्रवेश कर चुके थे। उसी गलियों में हम अपना सामान लेकर चल रहे थे। यह ख्वाब पूरा होने के तरह था कि हम दोस्तों के साथ आधी रात मुंबई में घूम रहे थे । कभी हमने इसकी कल्पना भी नहीं की थी ।अच्छा लग रहा था 10:05 मिनट जब हम चल रहे थे लेकिन लगातार आधा घंटा सुनसान सड़कों पर अंधेरे में भारी सामान लिए हाथ में चलना सबसे बुरा रहा । हाथ पूरी तरह से बेजान हो चुके थे । सामान हाथ में उठाया चलना अब मुमकिन नहीं हो रहा था ।पैर इतने दर्द करने लगे थे कि अब कदम उठाना भी सजा लग रहा था ।सबकी नजर आखिर कब वह रेलवे स्टेशन पहुंचेगा और कब हम जाकर बैठ जा ,थोड़ी हमें राहत मिलेगी इसी म अटकी हुई थी। आखिरकार हम लोकमान्य तिलक रेलवे स्टेशन पहुंच ही गए और वहां की स्थिति देख और ज्यादा मायूस हो गए ।

सबसे बुरी बात तो यह रही कि वहां पहुंचकर यह पता चला, कि ट्रेन रात के 1:00 बजे नहीं, बल्कि अगले दिन दोपहर 1:00 बजे है ।यानी कि हमें उस रेलवे स्टेशन पर एक रात गुजारनी है। रेलवे स्टेशन पर रात गुजारना यह तो कभी किसी सपने में भी नहीं सोचा था । रात गुजारना सोच लिया चलो यह कर लेंगे एक अनुभव होगा, दोस्त है साथ में लेकिन जैसा अनुभव रहा उसके बाद बस वक्त कब काटे ,कब अगला दिन आए और कब एक बजेंगे ,कब ट्रेन में सवार हो यही बात हमारे मन में घूमने लगी थी । एक जगह से फिर हम दूसरे जगह पर जाकर पहुंच गए पर लगा कि यह रेलवे स्टेशन तो बहुत ज्यादा अच्छा है । जैसे ही इस प्लेटफार्म पर हम आए दिखने में तो बहुत अच्छा लग रहा था लोकमान्य तिलक रेलवे स्टेशन अंदर कुर्सियां भी थी जहां पर हम बैठ सकते थे। हम अंदर

चले गए और अपनी अपनी जगह ले ली। पता चला कि हमें वही सोना है, सोचा चलो सो भी लेंगे यही एक रात गुजारनी है ,अब वह भी गुजार लेंगे। अपने सामान की भी रक्षा करनी है ऐसा नियत किया गया कि हमने सोचा कि जब 4 लोग सोएंगे तो हम दो लोग जागेंगे, इस तरह से हमने सोचा था कि हम रात गुजारेंगे । मुंबई सपनों की नगरी लेकिन स्टेशन पर जो हमारे साथ हुआ उसने हमारे सपनों को चूर-चूर कर दिया । 1 मिनट के लिए भी स्टेशन पर आंख बंद कर सोने नहीं मिला। पूरी रात जागकर बिताना आसान खेल नहीं था। इतना लंबा सफर तय करना ,उसके बाद आधा घंटा चलना, दोनों पैर जवाब दे चुके थे और ऐसे में जहां चैन की नींद सोना चाहिए, वहां पर हमसे यह कहा जाए कि रात भर सोने नहीं मिलेगा। सोने वालों पर पुलिस डंडे की बहार कर रहे थे। तब उसे पीटा जा रहा था सबसे बुरी हालत तो हमारी रेलवे स्टेशन पर हुई थी । मुंबई के बारे में जितना कुछ सुना था ,जो अच्छे ख्वाब देखे थे वह सब एक रेलवे स्टेशन पर आ चुकी थी ।आंखों में नींद, सोया नहीं जा रहा था।

इतना रोने का मन कर रहा था लेकिन आंसू थे कि आंखों से बह नहीं रहे थे । बस इसी चीज का इंतजार था कि कब अगली सुबह होगी, कभी वक्त ढल जाएगा , कभी अंधेरी रात छूट जाएगी ,कब दोपहर के 12:00 बज जाएंगे, कब हम ट्रेन में चढ़ जाएंगे । आखिरकार सुबह हो ही गई और हर

कोई बस 12:00 बजने का इंतजार कर रहा था।

हमारी बनारस जाने वाली ट्रेन का समय हो ही गया फिर अपना सामान लेकर जल्दी-जल्दी हम प्लेटफार्म की ओर चले गए जहां पर हमारी बनारस जाने वाली कामायनी एक्सप्रेस आने वाली थी। जैसे ही ट्रेन आ गई , हम सब ट्रेन में चढ़ गए। अपनी अपनी जगह ले ली। भूक लगी थी इसीलिए हमने जो भी घर से सामान लिया था, हमने बनाया और खा लिया। इस दिन के सफर में जो अनुभव रहा वह सबसे चौका देने वाला था । क्योंकि हमने कभी ऐसा अनुभव किया नहीं था। हमारे साथ ऐसा कभी कुछ हुआ ही नहीं था कुछ लोग जबरदस्ती से हमारे डिब्बे में घुस जाते हैं हमारी सीट पर बिना हमारी मर्ज़ी से बैठ जाते हैं और हम पर ही अपना रौब झाड़ते।

एक औरत तो आकर बैठ गई थी और उसने हमसे कहा कि वह 1 घंटे में अगले स्टेशन पर उतर जाएगी इसीलिए हमने उसे और उसकी बेटी को जगा दे दी सुबह से शाम हो गई 12:00 बजे से शाम के 5:00 बज गए 5:30 बज गए लेकिन वह औरत उस सीट से हिली ही नहीं । फिर कुछ लोग ऐसे भी चले आए जो हमारे पैरों में आकर बैठने लगे। सिर पर आकर बैठने लगे और जब हमने उनसे बात की कि वह यहां नहीं बैठ सकते ,वह हमसे ही झगड़ने लगे । एक औरत तो पूरी तरह से मुझसे और विंदा से लड़ने लगी लेकिन मैं और विंदा भी टस से मस नहीं हुए। हम भी अपनी बात पर अड़े रहे क्योंकि वह हमारा हक था । मुफ्त में यात्रा करना एक अपराध है, कुछ लोग तो जो सबसे ऊपर वाली सीट पर मैं सोई थी वहां चढ़ने लगे थे ।अरे !इतना भी समझ नहीं कि लड़कियां सोयी है वहां इन लड़कों को चढ़ने का मौका दिया जा रहा था।

लड़ झगड़ कर हमने अपने सीटों पर कब्जा जमा ही लिया । उस दिन की भी यात्रा लड़ने झगड़ने में ,अपनी सीट संभाले में ही चली गई । रात हो गई और ठंड जो है वह बढ़ने लगी। ऐसी ठंड हमने कभी भी महसूस नहीं की थी ।हमारी तो जैसे कुल्फी जम रही थी ।हाथ पैर जलने लगे थे ठंडी के मारे ।ना जमीन पर पैर रखा जा रहा था ,ना हिला जा रहा था ,बाल भी गीले गीले लगने लगे थे । ऐसा लग रहा था जैसे हम ट्रेन की सीट पर नहीं बल्कि किसी बर्फ़ पर सोए हैं और एक हमें ज्यादा ठंडी इसलिए लग रही थी क्योंकि हमारी सीटें जो है वह दरवाजे के पास थी । और ट्रेन के दोनों दरवाजे पर यात्री बैठे हुए थे । जिन्होंने टिकट खरीदें नहीं थी।जिसे रात हो गई भूख बढ़ने लगी ,भूख लगी थी इसीलिए ट्रेन में कुछ खाने के लिए हमने मंगवा दिया । खाना खाकर मैं सो गई। हमारी एक सीट पर एक औरत अपने बच्चों के साथ आकर बैठ गई थी। बच्चे इतने छोटे थे कि उसे देखकर वहां से हटाने का मन भी नहीं किया। और आगे तो मुझे पता भी नहीं हुआ क्या क्योंकि मुझे कब नींद लगी ,मुझे कुछ समझ भी नहीं आया। जब मेरी आंख खुली तो मैंने देखा कि हमारी सीट की हमारी डिब्बे के वहां पर एक चादर लगा दी गई है। जिससे कि हमारी जो सीट है वह दूसरों को नजर नहीं आ रही है ।और एक कमरे की तरह वह बन गया था ।फिर मेरे दोस्तों ने बताया कि रात को जो सीट पर बैठी थी ,उसके पति ने हमें ऐसा बना कर दिया है। उसने खुद हमारे लिए भी है ताकि कोई अन्य यात्री जो ट्रेन में अलग-अलग स्टेशन पर चढ़ते रहे वह हमें सताए ना ।उसकी सोच बहुत ही

अच्छी थी और एक अनजान व्यक्ति ने हमारी इस कदर मदद की थी। यह सबसे ज्यादा अच्छा था । उस ट्रेन में जहां लड़ने झगड़ने वाले इंसान क्रूरता देखी थी, जहां पर गाली गलौज बिना कारण हमें सुने थे ,वहां एक इंसानियत की मिसाल भी हमें देखने को मिल गई थी। उस आदमी को तो मैंने देखा नहीं और ना ही मुझे यह वाकया याद है ।लेकिन दोस्तों ने जो भी बताया और जो भी उसने हमारे लिए किया तहे दिल से उसका शुक्रिया मैं ताउम्र करती रहूंगी। इससे मुझे पता चला कि जहां मेरे मन में यह बात चल रही थी ,कि गोवा वाले अच्छे होते हैं और यह जो ट्रेन में जिन लोगों को देखकर ऐसा लग रहा था बनारस ,बिहार ,मध्य प्रदेश या अन्य देश के लोग हैं वह अच्छी नहीं है, यह धारणा उसने मेरी बदल दी थी । इंसान ,इंसान होते हैं कहीं भी रहे और यह इंसानियत की मिसाल थी।

अपनी सीट के डिब्बे के तरफ चादर लगाने का नुस्खा था , वह हमारे सभी दोस्तों ने देख लिया और उन्होंने भी ऐसे ही किया। हमारी चादर लगाने की तरकीब को देखकर कुछ यात्री जो नए-नए चल रहे थे, वह ऐसी ऐसी बातें कर रहे थे कि पहली बार यात्रा में देखा है, ऐसा हो रहा है। कुछ लोग तो हमें कह रहे थे कि दुल्हन अंदर बैठी है और ना जाने कितना कुछ कहा लेकिन हमें बातों से जरा भी फर्क नहीं पड़ा ।क्योंकि हम उस चादर के अंदर महफूज महसूस कर रहे थे ।

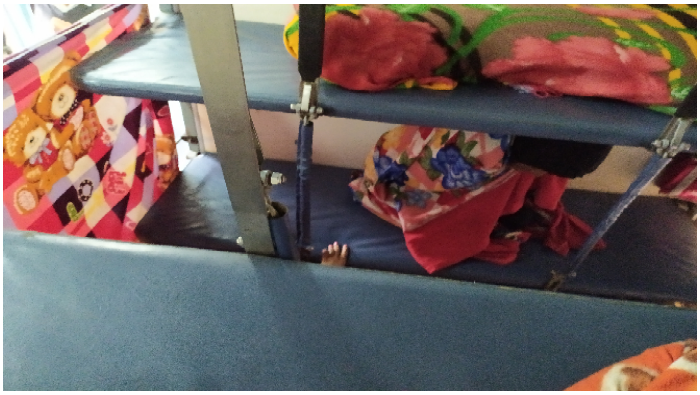

अब बनारस के सफर में बनारस की कामायनी एक्सप्रेस में हमारा यह दूसरा दिन था और आज ही वह दिन था, जब हम आखिरकार बनारस पहुंचने वाले थे । सुबह हो गई भूख लगी थी ट्रेन में कुछ खाने ही नहीं मिल रहा था। दोपहर हो गई लेकिन ट्रेन में कुछ खाने मिला ही नहीं ।भूख से जान जा रही थी । किसी किसी तरह से आगे आगे ट्रेन बढ़ती गई हर एक स्टेशन पर हमारी नजर दौड़ती चली गई लेकिन किसी भी स्टेशन पर हमारे खाने लायक हमें कुछ भी नहीं मिला । भूख से हम हाल बेहाल हो रहे थे और आखिरकार हम एक स्टेशन पर पहुंच ही गए जहां पर हमें खाने के लिए कुछ मिला। इस बार हमें खाने का स्वाद नहीं बल्कि खाने की चीजें चाहिए थी कहते जब भूख लगती है तो कुछ भी पेट में चला जाता है और शायद ऐसा ही हमारे साथ हुआ। जहां घर पर इतने नखरे की जाते हमारे खाने को लेकर, उस दिन

बिना स्वाद के चीजें भी हमने खा ली थी और एक संतुष्टि मिली थी कि हमें आखिरकार कुछ खाने को मिला। स्टेशन पर उतरकर झट से भागकर कुछ खाना ले आना यह एक अलग है हमारे लिए अनुभव रहा। देर रात तक कुछ मिलेगा नहीं इसलिए कई सारी चीजें एक साथ ही ले आना एक मजेदार किस्सा बन गया था उस दिन का।

ट्रेन में वक्त बीता चला गया । सोते ,जागते, गीत गाते यहां-वहां घूमते, ट्रेन के बाहर देखते हैं इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ने वाली महिलाओं को ढूंढे ढूंढे हमारा वक्त कैसा बीता कुछ समझ ही नहीं आया । और आखिरकार हम बनारस पहुंच ही गए इतनी खुशी बनारस पहुंचते ही सबके चेहरों पर देखने मिली ।ऐसा लगा जैसे महीनों से कहीं फंसे हुए थे और आखिरकार अब कुछ अच्छा हमारे साथ हो रहा है । इतनी उत्सुकता थी बनारस पहुंचते ही अपने होटल जाकर सोने की । थक चुके थे पूरी तरह से ।बनारस पहुंचते ही हमारे लिए कुछ गाड़ियां आ गई और उन गाड़ियों में बैठकर हम अपने होटल के लिए रवाना हो गए।

होटल के लिए जाते वक्त हमने रास्ते में देखा कि कई जगह पर बारात चल रही है। यहां घोड़ों पर बारातें जो हमने कभी टीवी पर देखी थी उस तरह से की जाती है ।बैंड बाजा बारात में नाचना गाना होता है। यह एक अलग अनुभव था। घोड़ों पर दूल्हे को सवार देख रहे थे लेकिन एक दृश्य ऐसा भी था कि जहां एक ओर हमने बारात जाती दिखी वहीं दूसरी ओर हमने शव यात्रा भी देखी थी ।और केदारनाथ सिंह जी की बनारस कविता इस वक्त याद आने लगी थी ।सही कहा था उन्होंने जहां बनारस पर एक जगह पर खुशी चलती है वहीं दूसरी ओर वहां शोक भी चलता है एक साथ लगातार।

गाड़ी का सफर भी खत्म हो चुका था और आखिरकार हम होटल पहुंच गए । हमारे होटल का

नाम था "पैराडाइस रेसिडेंसी।" होटल पहुंचते ही हमें अपने अपने रूम मिल गए। "205" यह था मेरे कमरे का नंबर। एक कमरे में 3 लोगों का रहना था और हमारे कमरे में थे मैं, चिन्मयी और योगिता।कमरा खोलते हैं इतनी खुशी महसूस हुई कि यह कमरा जो था वह बहुत ही ज्यादा अच्छा था। जैसे हमने सोचा था, उससे भी कहीं ज्यादा अच्छा।जैसे फूल खिलते है उसी तरह कमरे को देख कर हमारे चेहरे खिल गए थे। यह था कि कब हम नहाएंगे और कब हम उस बिस्तर पर लेट जाएंगे ।पूरी थकान जो 3 दिन की थी, वह एक रात में ही मिट जाए । यही सब के दिमाग में चल रहा था लेकिन खाना अब आना भी बाकी था। खाना आ गया, हम अपने कमरे से उठकर मेरी जो तीन अन्य दोस्त है, समीक्षा, विंदा और ऐश्वर्या उनके कमरे में चले गए । वहां बैठकर हमने खाना खाया, फिर नहाना धोना हो गया और हम चैन से सो गए । क्योंकि अगले दिन 7:30 बजे बनारस घूमने के लिए रवाना होना था और हमारा बनारस घूमने का पहला स्थान था बीएचयू यानी कि बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी/ काशी हिंदू विश्वविद्यालय।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय

3 दिन की थकान एक रात में मिटाना आसान होता नहीं। पहली बार विश्वविद्यालय के दोस्तों के साथ रहने का मौका मिला था और जाहिर से बात ही की जब दोस्त मिले तब सोना कम और बातें ज्यादा होती है। देर रात तक दोस्तों के साथ बातें चलती रही और फिर सब सो गए अगले दिन सुबह 5:30 बजे का अलार्म लगाया गया और हम झट से उठ बैठ गए क्योंकि हमें जल्दी से निकलना था । काशी हिंदू विश्वविद्यालय देखने जाना था ।काशी हिंदू विश्वविद्यालय ,जिसका नाम हमने सिर्फ किताबों में पढ़ा था ,कहानियों में पढ़ा था ।आज उसे अपनी आंखों से देखने का मौका मिल रहा था । इतनी उत्सुकता थी सारे विद्यार्थियों में यह देखने की ,आखिर अन्य प्रदेशों में विश्वविद्यालय होते कैसे है और जहां पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय के बारे में इतना सुना है तो अपनी आंखों से देखने की उत्सुकता विद्यार्थियों में और ज्यादा बढ़ गई थी । सब लोग जल्दी जल्दी तैयार हुए और काशी हिंदू विश्वविद्यालय के लिए हम सब पैदल ही रवाना हुए। हमारी होटल से कुछ ही दूर काशी हिंदू

विश्वविद्यालय बसा हुआ था। रास्ते पर चलना बनारस की गलियों में एक अलग ही अनुभव रहा । बनारस की वाहन कुछ अलग ही थी । यहां पर अधिकतर बस दिखाई नहीं दिए। यहां साइक्लो का प्रयोग ज्यादा देखने को मिला। साथ ही जो टांगा वह भी देखने को मिला, जो हमने केवल फिल्मों में ही देखा था । अलग-अलग तरह की रिक्शा देखने को मिली और रास्तों पर वाहनों की इतनी भीड़ शायद हमें कभी गोवा में देखी होगी, जितनी वहां देखने को मिली। बनारस की सड़कों पर ऐसा माहौल रहता है कि वहां पर यदि किसी का अपघात हो भी जाए ,तो जिसने जाकर गाड़ी मारी है ना वह उससे कुछ कहता है और जिसे चोट लगी है ना वह कहता है। बस दोनों अपने-अपने वाहनों उठाते हैं और चलने लग जाते हैं ।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के दरवाजे पर पहुंचकर ही बड़े अक्षरों में लिखा गया था और यह देखकर ही मन में उत्सुकता जाग उठी थी । अब हमें यह देखने मिलेगा।काशी हिंदू विश्वविद्यालय की एक अनोखी बात यह थी , विश्वविद्यालय की सड़कों पर भी अन्य सड़कों पर किस तरह से भीड़ लगी होती है ,उसी तरह से यहां भी लगी हुई थी । विश्वविद्यालय की पैदल ही की कई सारे विभाग देखने मिले।और सबसे रोमांचक बात यह लगी कि वहां पर जो इलाके हैं उनका नाम भी हिंदी लेखकों के ऊपर दिए गए थे या जो हिंदी साहित्य में जो महान व्यक्ति हैं उनकी नाम इलाकों को दिए गए थे ।जिसे हमने देखा कि वहां मीरा कॉलोनी ,हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के इलाकों को दिए गए थे।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में स्थित एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। इसे प्रायः बीएचयू (बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी) कहा जाता है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना (वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय एक्ट, एक्ट क्रमांक 16, सन् 1915) महामना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा सन् 1916 में बसंत पंचमी के पुनीत दिवस पर की गई थी। दस्तावेजों के अनुसार इस विश्वविद्यालय की स्थापना मे मदन मोहन मालवीय जी का योगदान केवल सामान्य संस्थापक सदस्य के रूप में था,

दरभंगा के महाराजा रामेश्वर सिंह ने विश्वविद्यालय की स्थापना में आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था दान देकर की। इस विश्वविद्यालय के मूल में डॉ॰ एनी बेसेन्ट द्वारा स्थापित और संचालित सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की प्रमुख भूमिका थी। विश्वविद्यालय को "राष्ट्रीय महत्त्व का संस्थान" का दर्ज़ा प्राप्त है। हैदराबाद के निज़ाम -मीर उस्मान अली खान ने विश्वविद्यालय के लिए 10 लाख रुपये का बड़ा दान किया।

संप्रति इस विश्वविद्यालय के दो परिसर हैं। मुख्य परिसर (१३०० एकड़) वाराणसी में स्थित है जिसकी भूमि काशी नरेश ने दान की थी। मुख्य परिसर में ६ संस्थान्, १४ संकाय और लगभग १४० विभाग है। विश्वविद्यालय का दूसरा परिसर मिर्जापुर जनपद में बरकछा नामक जगह (२७०० एकड़) पर स्थित है। ७५ छात्रावासों के साथ यह एशिया का सबसे बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय है जिसमें ३०,००० से ज्यादा छात्र अध्ययनरत हैं जिनमें लगभग ३४ देशों से आये हुए छात्र भी शामिल हैं।

इसके प्रांगण में भगवान विश्वनाथ का एक विशाल मंदिर भी है। सर सुंदरलाल चिकित्सालय, गोशाला, प्रेस, बुक-डिपो एवं प्रकाशन, टाउन कमेटी (स्वास्थ्य), पी.डब्ल्यू.डी., स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की शाखा, पर्वतारोहण केंद्र, एन.सी.सी. प्रशिक्षण केंद्र, "हिंदू यूनिवर्सिटी" नामक डाकखाना एवं सेवायोजन कार्यालय भी विश्वविद्यालय तथा जनसामान्य की सुविधा के लिए इसमें संचालित हैं। श्री सुन्दरलाल, पं॰ मदनमोहन मालवीय, डॉ॰ एस. राधाकृष्णन् (भूतपूर्व राष्ट्रपति), डॉ॰ अमरनाथ झा, आचार्य नरेन्द्रदेव, डॉ॰ रामस्वामी अय्यर, डॉ॰ त्रिगुण सेन (भूतपूर्व केंद्रीय शिक्षामंत्री) जैसे मूर्धन्य विद्वान यहाँ के कुलपति रह चुके हैं।

वर्ष २०१५-१६ विश्वविद्यालय की स्थापना का शताब्दी वर्ष था जिसे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, उत्सवों व प्रतियोगिताओं एवं २५ दिसंबर को महामना मालवीय जी की जयंती-उत्सव का आयोजन कर मनाया गया।

विश्वविद्यालय के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

(१) अखिल जगत की सर्वसाधारण जनता के, एवं मुख्यतः हिन्दुओं के, लाभार्थ हिन्दूशास्त्र तथा संस्कृत साहित्य की शिक्षा का प्रसार करना, जिससे प्राचीन भारत की संस्कृति और उसके उत्तम विचारों की रक्षा हो सके, तथा प्राचीन भारत की सभ्यता में जो कुछ महान तथा गौरवपूर्ण था, उसका निदर्शन हो।

(२) सामान्यतः कला तथा विज्ञान की समस्त शाखाओं में शिक्षा एवं अनुसन्धान को बढ़ावा देना।

(३) भारतीय घरेलू उद्योगों की उन्नति और भारत की द्रव्य-सम्पदा के विकास में सहायक आवश्यक व्यावहारिक ज्ञान से युक्त वैज्ञानिक, तकनीकी तथा व्यावसायिक ज्ञान का प्रचार और प्रसार करना।

(४) धर्म तथा नीति को शिक्षा का आवश्यक अंग मानकर नवयुवकों में सुन्दर चरित्र का गठन करना।

पं॰ मदनमोहन मालवीय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रीगणेश १९०४ ई. में किया, जब काशीनरेश महाराज प्रभुनारायण सिंह की अध्यक्षता में संस्थापकों की प्रथम बैठक हुई। १९०५ ई. में विश्वविद्यालय का प्रथम पाठ्यक्रम प्रकाशित हुआ। जनवरी, १९०६ ई. में कुंभ मेले में मालवीय जी ने त्रिवेणी संगम पर भारत भर से आयी जनता के बीच अपने संकल्प को दोहराया। कहा जाता है, वहीं एक वृद्धा ने मालवीय जी को इस कार्य के लिए सर्वप्रथम एक पैसा चन्दे के रूप में दिया। डॉ॰ ऐनी बेसेन्ट काशी में विश्वविद्यालय की स्थापना में आगे बढ़ रही थीं। इन्हीं दिनों दरभंगा के राजा महाराजा रामेश्वर सिंह भी काशी में "शारदा विद्यापीठ" की स्थापना करना चाहते थे। इन तीन विश्वविद्यालयों की योजना परस्पर विरोधी थी, अतः मालवीय जी ने डॉ॰ बेसेंट और महाराज रामेश्वर सिंह से परामर्श कर अपनी योजना में सहयोग देने के लिए उन दोनों को राजी कर लिया। फलस्वरूप बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी सोसाइटी की १५ दिसम्बर १९११ को स्थापना हुई, जिसके महाराज दरभंगा अध्यक्ष, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रमुख बैरिस्टर सुन्दरलाल सचिव, महाराज प्रभुनारायण सिंह, पं॰ मदनमोहन मालवीय एवं डॉ॰ ऐनी बेसेंट सम्मानित सदस्य थीं। तत्कालीन शिक्षामंत्री सर हारकोर्ट बटलर के प्रयास से १९१५ ई. में केंद्रीय विधानसभा से हिंदू यूनिवर्सिटी ऐक्ट पारित हुआ, जिसे तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंज ने तुरन्त स्वीकृति प्रदान कर दी। १४ जनवरी १९१६ ई. (वसंतपंचमी) के दिन ससमारोह वाराणसी में गंगातट के पश्चिम, रामनगर के समानान्तर महाराज प्रभुनारायण सिंह द्वारा प्रदत्त भूमि में काशी हिंदू विश्वविद्यालय का शिलान्यास हुआ। उक्त समारोह में देश के अनेक गवर्नरों, राजे-रजवाड़ों तथा सामंतों ने गवर्नर जनरल एवं वाइसराय का स्वागत और मालवीय जी से सहयोग करने के लिए हिस्सा लिया। अनेक शिक्षाविद् वैज्ञानिक एवं समाजसेवी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। गांधी जी भी विशेष निमन्त्रण पर पधारे थे। अपने वाराणसी आगमन पर गांधी जी ने डॉ॰ बेसेंट की अध्यक्षता में आयोजित सभा में राजा-रजवाड़ों, सामन्तों तथा देश के अनेक गण्यमान्य लोगों के बीच, अपना वह ऐतिहासिक भाषण दिया, जिसमें एक ओर ब्रिटिश सरकार की और दूसरी ओर हीरे-जवाहरात तथा सरकारी उपाधियों से लदे, देशी रियासतों के शासकों की घोर भर्त्सना की गई।

डॉ॰ बेसेंट द्वारा समर्पित सेंट्रल हिंदू कालेज में काशी हिंदू विश्वविद्यालय का विधिवत शिक्षणकार्य, १ अक्टूबर १९१७ से आरम्भ हुआ। १९१६ ई. में आयी बाढ़ के कारण स्थापना स्थल से हटकर कुछ

पश्चिम में १,३०० एकड़ भूमि में निर्मित वर्तमान विश्वविद्यालय में सबसे पहले इंजीनियरिंग कालेज का निर्माण हुआ तत्पश्चात क्रमशः आर्ट्स कालेज एवं साइंस कालेज स्थापित किया गया। १९२१ ई से विश्वविद्यालय की पूरी पढ़ाई कमच्छा कॉलेज से स्थानांतरित होकर नए भवनों में प्रारंभ हुई। विश्वविद्यालय का औपचारिक उद्घाटन १३ दिसम्बर १९२१ को प्रिंस ऑव वेल्स ने किया।

चिकित्सा विज्ञान संस्थान ,कृषि विज्ञान संस्थान, पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान, भारतीय प्रौद्यौगिकी संस्थान, प्रबन्ध शास्त्र संस्थान, विज्ञान संस्थान, संकाय, आयुर्वेद संकाय, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, संगीत एवं मंच कला संकाय, दृश्य कला संकाय, कला संकाय, वाणिज्य संकाय,

शिक्षा संकाय, विधि संकाय, सामाजिक विज्ञान संकाय।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय जाने का हमारा मूल उद्देश्य था कि हम काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से परिचित हो सकें। उनके हिंदी विभाग में हम जा सके और विश्वविद्यालय के हमने कई सारे विभाग देखें और हम हिंदी विभाग में भी जा पहुंचे ।जहां पर हमारा स्वागत उनके प्राध्यापकों ने किया और हमें एक व्याख्यान भी उनके प्राध्यापक द्वारा दिया गया। जो कि बहुत ही अच्छा रहा और हिंदी विभाग की जो पुस्तकालय है उसमें भी हमें जाने का मौका मिला।

हिंदी विभाग देखने के बाद और कई सारे संस्थान और संक्याओ को देखने के बाद हम सेंट्रल लाइब्रेरी पहुंच गए और सेंट्रल लाइब्रेरी बनारस देखने का हमें मौका प्राप्त हुआ। एक अलग ही

माहौल ऐसे पुस्तकालय में देखने को मिला। हम विद्यार्थी को 15 की गट में जाने का मौका दिया गया और हमें अंदर जाकर पुस्तकों के फोटो खींचना मना कर दिया गया था। बस हम पुस्तकों को देख सकते थे। पढ़ सकते थे लेकिन हम ना जेरॉक्स निकाल सकते ,ना फोटो खींच सकते थे। उस वक्त सेंट्रल लाइब्रेरी में ऐसा लग रहा था जैसे हमारे सामने हमारा पसंदीदा खाना परोसा गया है , लेकिन हम केवल उस खाने को दूर से देख सकते हैं खा नहीं सकते, हमारे हाथ बांधे गए हैं।

केन्द्रीय पुस्तकालय की एक सबसे खास बात यह है कि यहां पर हर तरह की पुस्तकें देखने को मिल जाती थी । हर विषय की पुस्तकें यहां आसानी से उपलब्ध थी ।एक ही विषय की कितनी सारी पुस्तकें ।कुछ ऐसे भी पुस्तके थे जिनका केवल हमने नाम सुना था। पुरानी से पुरानी पुस्तकें और नई से नई पुस्तकें भी यहां मौजूद थीं। ज्ञान का भंडार सेंट्रल लाइब्रेरी को कहा जा सकता है। बहुत बड़ी थी केन्द्रीय पुस्तकालय जहां पर हर विषय के लिए अलग-अलग जगह दी गई थी। एक ही विषय के इतनी तादाद में पुस्तकें, मैंने गोवा में किसी लाइब्रेरी में नहीं देखे थे और हिंदी की इतनी पुस्तकें देखने का मौका हमें पहली बार मिल रहा था। कुछ भी १५-२० मिनट तक सेंट्रल लाइब्रेरी में घूमने के बाद, किताबों को देखने के बाद ,कुछ पन्ने पढ़ने के बाद हम केन्द्रीय पुस्तकालय से निकल गए। हां, केन्द्रीय पुस्तकालय के भीतर हमें तस्वीरें खींचने नहीं मिली लेकिन हम सेंट्रल लाइब्रेरी के बाहर तस्वीरें खींचने से बाज नहीं आए। कई सारी तस्वीरें विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा खींची गई।

सेंट्रल लाइब्रेरी से होते ही हम दोपहर का वक्त हो गया था और सभी के पेट में चूहे दौड़ने लगे थे और यह पहली बार था कि हम काशी में अपना भोजन करने वाले थे । वह सभी में उत्सुकता थी जितना भी हमें बताया गया था यहां के भोजन के बारे में, यहां के लोगों के बारे में , रहन-सहन तौर-तरीकों के बारे में ,अपनी खुली आंखों से वह देखना ,वह महसूस करना यह अपने आप में ही एक बहुत बड़ी हमारे लिए खुशी की बात थी ।वहां से निकलते ही हम एक होटल तक पहुंच गए और वहां सभी ने अपने अपने लिए भोजन का इंतजाम किया ।भोजन होते हैं जो विद्यार्थी थे सभी एक काशी में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के आसपास स्थित मंदिर का नाम विश्वनाथ मंदिर था उसमें

चले गए। मैं और मेरे दो-तीन दोस्त और हमारे साथ हमारी शिक्षिका थी जो इस मंदिर में हम नहीं गए क्योंकि हमारी कुछ नीजि कारण थे। इसी बीच हमने देखा कि जहां पर हम बैठे हैं फिर मंदिर के बाहर एक छोटी सी पुस्तक बिक्री की एक दुकान थी जिसमें ,मैं अपने दोस्त के साथ चली गई और हमने वहां कुछ किताबे देखिए जो हमें पसंद आई और हमने वह खरीद ली । क्योंकि गोवा में ऐसा माहौल हमें मिलता नहीं है जहां पर हिंदी की पुस्तक है आसानी से हमें मिल जाए । लेकिन यहां काशी में यह एक सबसे अच्छी बात थी कि जगह-जगह पर पुस्तकों की दुकानें थी और खास करके हिंदी की पुस्तकें जो थी वह यहां आसानी से मिल रही थी। हमारे लिए बहुत ही जरूरी थी वह पुस्तकें ले ली थी। उसके बाद सभी मंदिर गए थे वापस आ गए, कुछ सजावट की चीजें कुछ विद्यार्थियों ने ले ली और फिर उसके बाद हम काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पास जमा हो गए। फिर यह फिर निर्णय लिया गया कि हम हिंदू विश्वविद्यालय में ही स्थित भारत कला भवन देखने के लिए जाएंगे।

लेकिन मैं और मेरे कुछ दोस्तों को भारत कला भवन देखना नहीं था क्योंकि यह हमारी नजर गड़ी थी राजकमल प्रकाशन द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शन में । हम चाहते हैं कि हम वहां जाकर कुछ पुस्तकें खरीद लें जो कि हमें गोवा में आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाती है । लेकिन क्योंकि यह पहले से ही सोचा गया था कि 1 दिन में यह सारी जगह है देखने हैं तो उसमें से एक था भारत कला भवन । तो हमें भारत कला भवन देखने के लिए जाना पड़ा। उस दिन किस्मत हमारे साथ थी क्योंकि जब हम भारत कला भवन पहुंचे तब पता चला कि 4:30 बजे भारत कला भवन जो है वह बंद हो जाता है। और जब वहां हम पहुंचे थे 15 मिनट में पूरा भारत कला भवन देखना संभव नहीं हो पाता इसीलिए फिर हमें भारत कला भवन से निकलना पड़ा और जैसे हम वहां से निकलने लगे, तो हम सभी ने राजकमल प्रकाशन द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शन में जाने की जिद की ।और जिन विद्यार्थियों को इस प्रदर्शनी में भाग लेना था या फिर जो भी कुछ खरीदना था वह सभी विद्यार्थी पुस्तक प्रदर्शन में चले गए।

पुस्तक प्रदर्शन में जाना हमारे लिए सबसे अच्छी बात रही। हमारे कई सारे विद्यार्थी और कुछ शिक्षक हमारे होटल की ओर रवाना हो चुके थे। हम बस कुछ लोग हमारे एक शिक्षक के साथ होटल की ओर रवाना हुए। होटल पहुंच कर हमें अस्सी घट जाने का आदेश मिला। अस्सी घाट गए लेकिन जब तक हम घाट पहुंचे तब तक आरती हो चुकी थी । यह निर्णय लिया गया की अगले दिन आरती के लिए ऐसी घाट पर हम फिर आएंगे।अस्सी घाट से आते हुए हमें यह बताया गया कि हमारे जो अन्य साथी जो पुस्तक प्रदर्शनी से जल्दी निकल गए थे, उन्होंने रास्ते में अपने लिए खाने के लिए कुछ इंतजाम कर लिया था ।तो हमें बताया गया था कि हम अपने भी खाने का कुछ इंतजाम कर ले ।तो चलते वक्त रास्ते में हमने कई सारे होटलों में देखा फिर भटकते भटकते हम एक होटल तक पहुंचे जिसका नाम था द विलेजर्स..बड़ा ही अच्छा माहौल रहा इस होटल में । और एक घर जैसा एहसास होने लगा क्योंकि हम सभी विद्यार्थी इस होटल में नहीं थे ।हम में से केवल कुछ ही विद्यार्थी थे और अधिकतर मेरी कक्षा के विद्यार्थी हम ज्यादा इसमें थे क्योंकि हम थक चुके थे और पेट में चूहे भी दौड़ने लगे थे तब हम सिर्फ खाने का इंतजार कर रहे थे । और इसी बीच होटल में गाने भी बजने लगे और हम सब के पैर इन धुनों पर थीरकने लगे। फिर खाना खा कर हम होटल की तरफ मुडे।

चुके 10:00 बज थे और हमारे

शिक्षक ने बताया था कि शायद हम पर डांट पड़ सकती है, क्योंकि रात बहुत हो चुकी थी और हम सब चुपचाप होटल में घुसने लगे और हमारी जो विभाग के अध्यक्ष है उनके रूम के पास हम जाकर इकट्ठा हो गए। चेहरे पर मुस्कान हाथ में दिल वाला गुब्बारा अपने दोस्तों के साथ देर रात खेलना, एक नई जगह पर एक अलग अनुभव करना ,बड़ा ही मजेदार बहुत अच्छा लग रहा था । हमारा पहला दिन कितना अच्छा गुजरा था । पूरा दिन घूमना काशी हिंदू विश्वविद्यालय देखने का मौका मिला और उस होटल में मजे करना बहुत सालों बाद ऐसा मौका मिला था मस्ती करने का। वक्त के साथ सब कुछ बदल जाता है कभी खुशी कभी गम। किसे खबर दी है इतने मस्ती भरे माहौल में मुस्कान लिए मैं आ रही थी। लेकिन गम का खज़ाना मेरा इंतजार कर रहा था। किसे खबर थी की होटल में पहुंच कर मुझे सवालों के कटघरे में खड़ा होना पड़ेगा। होटल में जो अपने दोस्तों के साथ नृत्य किया गया था उस विषय को लेकर सब विद्यार्थियों के सामने मुझे डांट पड़ी। मैं ऐसे माहौल के लिए शायद तैयार नहीं थी ।मेरे दिमाग में कुछ था भी नहीं कि ऐसा कुछ होने वाला है ।मैं गलत नहीं थी ।नृत्य सभी ने किया था ।हां ,उत्तर प्रदेश का माहौल समझने में शायद मुझसे गलती हो गई थी ।1 दिन में किसी प्रदेश के लोगों की सोच जाना आसान नहीं है यही शायद मेरी गलती थी ।उस होटल में हमारे विद्यार्थियों के अलावा कोई नहीं थे लेकिन फिर भी विभागाध्यक्ष की बातें मेरे दिल को भीड़ गई थी। उनकी बातें गलत नहीं थी, पर गलती तो मेरी भी नहीं थी। बहुत बूरा लगा, हद से ज़्यादा क्यों की ऐसी बातें सुनने की मेरी आदत नहीं थी।

रात भर मेरा रोना धोना चलता रहा , मेरे दोस्तों ने मेरा बहुत साथ दिया। काफ़ी ज़्यादा समझाया भी, और आखिरकार मैं समझ गई। ज़िन्दगी में उतार चढ़ाव तो आते ही रहते है.. बुरे वक्त में बिखरना या निखरना अपने हाथ में होता है। शायद इसी सोच ने मुझे हौसला दिया। फिर से ज़िन्दगी की और मुस्कुरा कर आगे बढ़ते रहना यही मैंने सीखा है। इसीलिए अगले दिन जैसे कुछ हुआ ही नहीं वैसे मैं थी। खुश..।

वाराणसी में फिर नई सुबह

रात गई बात गई फिर हुई नई सुबह सूरज की किरने फिर जिंदगी में एक नई उम्मीद लेकर आयी। रात को भी घटना भुला आसान नहीं था लेकिन उस हादसे को याद करते रहना यह भी तो ठीक नहीं था और वैसे भी जब दोस्तों का साथ हो तो बुरी बातें याद करना इतना मुनासिब नहीं होता ।और अब तो वाराणसी में हमारा दूसरा दिन था ।नई जगह घूमने थी, बहुत कुछ देखना था और आज का दिन तो हमारे लिए बहुत ज्यादा खास था क्योंकि आज हम जाने वाले थे सारनाथ ।कितना कुछ करना था ।सारनाथ ,लमही ,लहरतारा इन जगहों पर जाने की हमारी उत्सुकता हमारे चेहरे पर हमारे दिल पर छाई हुई थी। सुबह सुबह तैयार होकर हम सब गाड़ियों का इंतजार करने के लिए रास्ते पर आकर खड़े हो गए थे। जैसे ही गाड़ियां आ गई अपनी अपनी गाड़ी में सब लोग बैठ गए।सब लोग गाड़ियों में भी ऐसे चढ जाते थे जैसे कि अपने अपने दोस्तों के साथ और फिर आपके लिए सब लोग रवाना हो गया। सारनाथ पहुंचकर जो हमने दृश्य देखा वह हमारे मन को बहुत ही

ज्यादा मोहक लगा। सारनाथ एक ऐसी जगह थी जहां पर मन खुश हो जाता है वाराणसी में जो हमने मोहाल देखा था उसके बाद हमें नहीं लगा था कि इतनी खूबसूरत जगह वाराणसी में होगी। इतनी साफ-सुथरी ,इतनी खूबसूरत ,इतनी शांत दिल खुश करने वाली।

सारनाथ पहुंचकर हमारी खुशी का तो ठिकाना नहीं था ।बुद्धा की उस लंबे से मूर्ति को देख कर वहां फैली हुई उस हरियाली को देखकर नई-नई खूबसूरत सी इमारतों को देख कर मन जैसे खुश हो गया था। ऐसा लग रहा था कि अब वाराणसी आना हमारा सार्थक हो गया ।अब वाराणसी से उम्मीद बढ़ गई थी।

सारनाथ, काशी अथवा वाराणसी के १० किलोमीटर पूर्वोत्तर में स्थित प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल है। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश यहीं दिया था जिसे "धर्म चक्र प्रवर्तन" का नाम दिया जाता है और जो बौद्ध मत के प्रचार-प्रसार का आरंभ था। यह स्थान बौद्ध धर्म के चार प्रमुख तीर्थों में से एक है (अन्य तीन हैं: लुम्बिनी, बोधगया और कुशीनगर)। इसके साथ ही सारनाथ को जैन धर्म एवं हिन्दू धर्म में भी महत्व प्राप्त है। जैन ग्रन्थों में इसे 'सिंहपुर' कहा गया है और माना जाता है कि जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का जन्म यहाँ से थोड़ी दूर पर हुआ था। यहां पर सारंगनाथ महादेव का मन्दिर भी है जहां सावन के महीने में हिन्दुओं का मेला लगता है।

सारनाथ में अशोक का चतुर्मुख सिंहस्तम्भ, भगवान बुद्ध का मन्दिर, धामेख स्तूप, चौखन्डी स्तूप, राजकीय संग्राहलय, जैन मन्दिर, चीनी मन्दिर, मूलंगधकुटी और नवीन विहार इत्यादि दर्शनीय हैं। भारत का राष्ट्रीय चिह्न यहीं के अशोक स्तंभ के मुकुट की द्विविमीय अनुकृति है। मुहम्मद गोरी ने सारनाथ के पूजा स्थलों को नष्ट कर दिया था। सन १९०५ में पुरातत्व विभाग ने यहां खुदाई का काम प्रारम्भ किया। उसी समय बौद्ध धर्म के अनुयायों और इतिहास के विद्वानों का ध्यान इधर गया। वर्तमान में सारनाथ एक तीर्थ स्थल और पर्यटन स्थल के रूप में लगातार वृद्धि की ओर अग्रसर है।

पहले यहाँ घना वन था और मृग-विहार किया करते थे। उस समय इसका नाम 'ऋषिपत्तन' और 'मृगदाय' था। ज्ञान प्राप्त करने के बाद गौतम बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश यहीं पर दिया था। सम्राट अशोक के समय में यहाँ बहुत से निर्माण-कार्य हुए। सिंहों की मूर्ति वाला भारत का राजचिह्न सारनाथ के अशोक के स्तंभ के शीर्ष से ही लिया गया है। यहाँ का 'धमेक स्तूप' सारनाथ की प्राचीनता का आज भी बोध कराता है। विदेशी आक्रमणों और परस्पर की धार्मिक खींचातानी के कारण आगे चलकर सारनाथ का महत्व कम हो गया था। मृगदाय में सारंगनाथ महादेव की मूर्ति की स्थापना हुई और स्थान का नाम सारनाथ पड़ गया।

एक विशाल बुद्ध की मूर्ति के साथ साथ ऐसा सारनाथ जगह में कई सारे छोटी-छोटी बुद्ध की मूर्तियां भी हमें देखने को मिल जाती है। विशाल से बुद्ध की मूर्ति के दाहिने बाजू में एक खूबसूरत सा मंदिर भी बनाया गया है जिसमें बुद्ध की एक सुनहरे रंग की मूर्ति हमें देखने को मिल जाती है उसी तरह जगह-जगह पर सुनहरे रंग वाली बुद्ध की हंसते हुए बुद्ध की मूर्तियां देखने को मिल जाती है साथ ही एक काले रंग के बुद्ध की मूर्तियां में जाती है साथ ही वहां अशोक स्तंभ भी हमें देखने को मिल जाते हैं। बड़ी खूबसूरती से इस जगह को रखा गया है हरियाली पानी सब कुछ यहां देखने को मिल जाता है बहुत ही बढ़िया जगह है और जिसे पूरी तरह से देखने के लिए 3000 घंटे तो लगभग लग ही जाते हैं लेकिन हमें क्योंकि जल्दी थी और जो कि 1 दिन में हमें कई सारी जगह नहीं देखनी थी इसलिए एक-दो घंटे से ज्यादा हमने यहां अपना वक्त नहीं बिताया लेकिन हमने कई सारी जगह देखी है सारनाथ में।

सारनाथ से बाहर निकलते ही प्रवेश द्वार पर कुछ दुकानें थी और जिन्हें पहले अंदर प्रवेश करते वक्त हमने नजरअंदाज कर दिया था ।क्योंकि हमें उस वक्त उस जगह को देखने की उत्सुकता ज्यादा थी लेकिन जैसे हम उस जगह से बाहर निकलने लगे, तब यह जाहिर सी बात थी कि अधिकतर महिला विद्यार्थी होने के कारण कुछ खरीदने करने में हमारी दिलचस्पी ज्यादा रहती है। और यह दुकाने देख कर हम अपने आप को रोक नहीं पाए और हम सभी दुकानों पर टूट पड़े ।तो इन दुकानों में कहीं बुद्धा कुछ मूर्तियां थी छोटी छोटी सी खूबसूरत वाली और साथ ही यहां कुछ महिलाओं के लिए वस्तुएं भी थी। हम सभी इन चीजों को खरीदने में मगन हो गए और कपड़े से बनी थैलियां, बटवे जो भी हमें मिला हमने वह ले लिया। अपने लिए, अपने घर वालों के लिए, अपने दोस्तों के लिए और सबसे ज्यादा जो खरीदी की है वह थी ताकि जो खूबसूरत ही छोटी-छोटी मूर्तियां थी उनकी खरीदी सबसे ज्यादा हुई और यहां हमारा वक्त शायद ज्यादा चला गया और जैसे ही खरीदी खत्म हो गई तब हमें झट से अपने अपनी गाड़ी में बैठने का आदेश मिल गया ।

और इसी कारण हम सब अपने-अपने गाड़ियों की तरफ जा ही रहे थे कि इतने में हमें कुछ लोगों ने बताया कि यहां बनारसी साड़ी किस तरह से बनती है, वहां केंद्र है तो हम वहां जाकर देख सकते हैं फिर एक छोटी सी फैक्ट्री है जहां पर हम जाकर बनारसी साड़ी देख सकते हैं। फिर खरीद सकते हैं ।तो हम वहां भी गए हमने साड़ियां देखी और शायद कुछ लोगों ने खरीदी लेकिन मेरा तो बनारसी साड़ी खरीदने का कोई मन नहीं था क्योंकि मेरे परिवार में साड़ियां पहने वाले लोग हैं नहीं ।तो मैंने साड़ियां खरीदने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाई लेकिन इस फैक्ट्री में या फिर एक दुकान में हम कह सकते हैं कि वहां बनारसी साड़ी हाथों से बनाई जा रही थी और इस प्रक्रिया इस क्रिया को देखने में मेरी दिलचस्पी ज्यादा थी ।तब मुझे ऐसा लगने लगा कि जितनी भी कीमत साड़ियों की लगाई जाती है, वह सार्थक है क्योंकि इन साड़ियों को बनाने में उतनी मेहनत लगती है। धागे धागे को लेकर बनाना आसान काम नहीं है और इतनी मेहनत लेकर यदि कोई चीज बनाई जाए उसकी सही कीमत होनी चाहिए।

लमही - प्रेमचंद की नगरी

सारनाथ से होकर योजना बनाई गई थी कि हम सीधे सीधे वही जाएंगे प्रेमचंद की नगरी और लेकिन हमारा ज्यादा समय उस साड़ियों में चला गया । लेकिन अब वक्त था लमही जाने का ।

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों जैसी ही उनके गांव की कहानी। वाराणसी जिला मुख्यालय से करीब 15 किलोमीटर दूर वाराणसी-आजमगढ़ राष्ट्रीय राजमार्ग पर पांडेयपुर चौराहे से करीब पांच किलोमीटर का यह रास्ता पूरा होने पर जैसे ही गोदान के होरी-धनिया, पूस की रात के हलकू जैसे किरदारों के जनक मुंशी प्रेमचंद के गांव लमही का प्रवेश द्वार आता है, उनकी छाप महसूस होने लगती है।

जिन प्रेमचंद को हमें केवल किताबों में पढ़ा था। उनके जगह के बारे में केवल किताबों में ,कहानियों में, उपन्यासों में सुना था ,पढ़ा था। आज अपनी आंखों से देखने का मौका था। जिस घर में बैठकर प्रेमचंद की कहानियां लिखा करते थे, जिस जगह पर बैठकर उन्होंने इतने सारे अनुभव किए थे ,आज उस जगह को देखने का उस वातावरण को अनुभव करने का मौका था। जैसे ही लमही में गाड़ी चलने लगी पूरा का पूरा गांव वाला एक अनुभव आने लगा। जिस गांव के बारे में हमने किताबों में पढ़ा था ,आज वही हम अनुभव कर रहे थे । वही मिट्टी की खुशबू, वही मिट्टी से बने हुए घर, वो ट्रैक्टर की आवाज और सभी वैसा ही था।

आखिरकार हम प्रेमचंद के स्मारक पहुंची गए। प्रेमचंद के घर यह अनुभव ही अलग था जिसे शायद ही शब्दों में बयां किया जा सके। हिंदी के विद्यार्थियों में अब प्रेमचंद एक ऐसे व्यक्तित्व है जिनका हिंदी के विद्यार्थियों पर प्रभाव हमेशा बना रहता है ।अधिक से अधिक विद्यार्थियों के पसंदीदा लेखक प्रेमचंद ही रहे हैं और ऐसे में जहां पर मेरे भी पसंदीदा लेखक प्रेमचंद रहे हैं, वहां उनके घर को देखना, उनके घर में प्रवेश करना यह किसी ख्वाब का पूरा होने से कम नहीं था।

हमने प्रेमचंद के घर में प्रवेश किया ।उनकी किताबें जो लगाई हुई है, वह सारी किताबें देखि। सोजे वतन से लेकर उनका अंतिम उपन्यास मंगलसूत्र जो अधूरा रह गया था । उनकी तस्वीरें जो शायद ही आसानी से उपलब्ध हो वह सब हमें देखने का मौका मिला ,किन चीजों का भी इस्तेमाल करते थे ,उनका गिली डंडा, किस जगह पर बैठकर अपनी कहानियां लिखकर के, उपन्यास में लिखें यह सब देखने का मौका मिला। उनका स्मारक देखने का मौका मिला और एक व्यक्ति जो इस जगह का ध्यान रखते हैं उन्होंने हमें कुछ समय के लिए प्रेमचंद की जगह के बारे में थोड़ा व्याख्यान दिया।

प्रेमचंद जी के घर ,उनकी यादें ,उनकी किताबों और वह सब जो हमने पढ़ा था, अब हम उसे संबंध जोड़ पा रहे थे और कुछ वक्त प्रेमचंद जी के घर में उनके लमही गांव में बिताने के बाद हमें जाना था कबीर की नगरी और इसीलिए हम सब लोग लमही से रवाना हो गए।

कबीर के जन्म स्थान

हिंदी जगत में कबीर का नाम ना हो ऐसा हो ही नहीं सकता। हिंदी का हर विद्यार्थी कबीर को भलीभांति जानता है। कबीर को पढ़ते आए हैं और आज भी हिंदी के विद्यार्थियों ने पढ़ रहे हैं । कई लोग तो कबीर की बातों को, उनके विचारों को अपने जीवन में डालते आ रहे हैं और आजकल के विद्यार्थियों ने पढ़कर उनके विचारों को अपने जिंदगी में डालने का प्रयास करते रहे। तृतीय वर्ष में "कबीरा खड़ा बाजार" में यह नाटक जब पढ़ा था तब उसमें एक घटना थी कि लहरतारा में कबीर का जन्म हुआ एक तालाब के किनारे ।वह नूरा और नीमा को मिले थे और आज हम उसी जगह जाने वाले थे जहां पर कबीर का जन्म हुआ था।

जिन कबीर के दोहों को ,उनके पदों को ,उनके विचारों को हम बाल अवस्था से सीखते हैं ,आज उनके जन्म स्थल को देखने का एक स्वर्ण अवसर हमें मिलने वाला था।

कबीर, एक ऐसे व्यक्तित्व है जिनका प्रभाव मुझ पर सबसे अधिक है ।हिंदी के लेखकों में, कवियों में से मेरे सबसे प्रिय मेरे चहिते कबीर है। मैं सबसे अधिक उनके विचारों से प्रभावित होती ।धर्म को लेकर ,समाज को लेकर, समाज में घट रही कुरीतियों को लेकर, रीति-रिवाजों पर जिस प्रकार से भी प्रहार करते हैं, जिस तरह से सड़ी गली परंपराओं का वे खंडन करते हैं ,समाज के हित के लिए काम करना और समाज में हर किसी को एक ही नजरिए से देखना उनकी यह बातें मुझे सबसे ज्यादा पसंद है।

जिस तरह से वे कहते हैं कि भगवान हर एक इंसान में बसा है ,वह पत्थर की मूर्तियों में ना कैद है ना ही मस्जिदों में है ,ना मंदिरों में भगवान तो हर किसी इंसान में है। इंसान के दिल में व्यास करता है।

जैसे ही हम लहरतारा पहुंचे, कबीर की नगरी ।कबीर के जन्म स्थल पर इतनी उत्सुकता थी वह शायद कहीं ना कहीं पूरी तरह से खत्म हो गई। क्या क्या सोचा था और क्या निकला जैसे कहा जा सकता है कि खोदा पहाड़ निकला चूहा ।ऐसे ही कुछ परिस्थिति उस वक्त हो चुकी थी। हमने सुना था कि, कबीर एक झोपड़े में उन्होंने अपना जीवन बिताया है लेकिन जब हम लहरतारा, कबीर के जन्म स्थल पर पहुंचे तो देखा कि एक

बहुत बड़ा आलीशान महल खड़ा कर दिया गया है कबीर के नाम पर। यह बात मुझे बहुत ज्यादा खली। आलीशान महल को देखकर मन जैसे बुझ गया और उस महल में कबीर की मूर्ति रखी गई है और उस मूर्ति की पूजा की जा रही है ।यह सब वही बातें हैं जिनका खंडन कबीर ने किया था। और आज कबीर को उसी जगह पर रख दिया गया है। उनकी पूजा की जा रही है जबकि वे इन प्रथाओं के खिलाफ थे।

ऐसा लगने लगा कि जिन्होंने भी आलीशान महल बांध कर रख दिया है, कबीर के नाम पर ,कबीर के भक्त खुद को वह कहते तो है लेकिन सही मायने में वे कबीर के भक्त बन नहीं पाए हैं ।क्योंकि कबीर अगर होते तो कभी ऐसा नहीं चाहते ।आलीशान महलों में जिंदगी गुजारने की ख्वाहिश उनकी तो नहीं थी। भगवान बन अपनी यह मूर्ति की पूजा कोई करें यह शायद उन्हें कभी गवारा नहीं होता।

उन्होंने अपनी जिंदगी बहुत ही सीधे साधे तरीके से ,बहुत सारी तकलीफ , कठिनाइयों का सामना करते हुए गुजारी थी और आज उनके मृत्यु के उपरांत उनकी एक अजीब मूर्ति के लिए इतना बड़ा आलीशान महल बनाया गया है। शायद वे होते तो उन्हें अच्छा लगता कि गरीब लोगों के लिए ऐसे जगह पर रहने के लिए घर बनाए जाते हैं लेकिन...।

इसके बाद हमने वह तालाब भी देखा जहां पर कबीर ,नीमा और नूरा को मिले गए थे । उस तालाब को देखकर थोड़ा अच्छा लगा लेकिन मन बैठ गया था ऐसा दृश्य देखकर।

आज घूमने फिरने में वक्त कैसे चला गया कुछ समझ ही नहीं आया ।और लहरतारा से आते आते हमें कब 4:00 बज गए समझ ही नहीं आया और करीब 4:00 बजे के आसपास हम एक जगह पर रुके और एक छोटे से होटल में हमने अपना भोजन किया । और अब भोजन करने के बाद हम सब अस्सी घाट के लिए रवाना हुए क्योंकि हमें आज अस्सी घाट पर आरती दर्शन करने थे।

अस्सी घाट आरती दर्शन

अपनी निराली छटा के लिए दुनियां भर में मशहूर काशी के घाट जहां आज भी अध्यात्म, योग, धर्म और दर्शन के केंद्र हैं। वहीं देशी- विदेशी पर्यटकों आदि सभी के लिए आकर्षण के केंद्र भी है। गंगा नदी के किनारे अर्धचंद्राकार रुप में फैले, इन घाटों को देखने के लिए विदेशी सैलानियों का ताता लगा होता है। दो नदियों के बीच (वरुणा + असी) बसा होने के कारण काशी का नाम वाराणसी पड़। यहां की सबसे प्रसिद्ध और पहला घाट अस्सी घाट है जहां से गंगा वाराणसी में प्रवेश करती है अतः यह घाट सभी घाटों में शुद्ध है। यहाँ गंगा का स्वरुप भी साफ़ सुथरा तथा प्रदुषण रहित है।

वाराणसी के लगभग सौ घाटों में से प्रमुख घाट अस्सी घाट, ललिता घाट, सिंधिया घाट, तुलसी घाट , हरिश्चन्द्र घाट, मुंशी घाट, जैन घाट, अहिल्याबाई घाट, केदार घाट, प्रयाग घाट, चेतसिंह घाट, दशाश्वमेध घाट तथा नारद घाट। इन घाटों में भी सबसे अधिक महत्व वाला तथा साफ़ सुथरा एवं सर्वाधिक रौनक वाला घाट है दशाश्वमेध घाट जहां पर गंगा आरती होती है।

गंगा आरती के बारे में बहुत सुना था ।वाराणसी आने का एक हमारा लक्ष्य गंगा आरती देखना भी था। इसलिए नहीं क्योंकि हम इस अंधविश्वास को मानते हैं कि यहां पर आने से सारे पाप धुल जाते हैं लेकिन इसलिए क्योंकि यह वातावरण मनमोहक होता है और यह नजारा शायद हमें फिर कभी देखने मिले। 1 दिन पहले तो हम अस्सी घाट पर आकर चले गए थे केवल दूर से देखकर क्योंकि हमें उस दिन देर हो चुकी थी और आरती हमें देखने नहीं मिली थी ,लेकिन आज हमने अपना सारा वक्त अस्सी घाट घूमने के लिए रखा था ।तो जैसे हम इस घाट पर पहुंच चुके तो हमारे लिए एक नाव का इंतजाम किया गया था, और हम सब बहुत ज्यादा उत्सुक थे कि हमें नदी में, गंगा नदी में घूमने का मौका मिल रहा है और जितने भी घाट है वह हमें देखने का मौका मिल रहा है।

जिस तरह से छोटे बच्चे हैं छोटी छोटी चीजों को देखकर खुश हो जाते हैं ,उनका मन बेहेलने लगता है ।उसी प्रकार से हम भी पागल हुए जा रहे थे ,उस नाव में बैठना और उस नदी में सैर करना एक उम्दा अनुभव रहा। एक खास बात यह थी कि इस नाव में बैठने से पहले कई सारे विद्यार्थियों ने

बोतले ले ली थी ताकि वह पवित्र गंगाजल अपनी बोतलों में भर अपने घर ले जा सके।अब यह भी एक विरोधाभास की तरह लग जाता है, जहां पर हम कबीर के विचारों को मानते हैं और हम पढ़े लिखे हैं और फिर भी हम ऐसे अंधविश्वासों में यकीन रखते हैं। लेकिन देखा जाए तो कई विद्यार्थी ऐसे थे जो चाहते नहीं थे कि वह पानी लेकर घर जाए ,लेकिन क्योंकि उनके घर वालों ने उनसे कहा था और घरवालों को यह बात समझाना कि वह जल शुद्ध नहीं ,और उस जल से पाप नहीं धूल जाते यह बात समझना बहुत ही कठिन काम है और इसी वजह से चुपचाप विद्यार्थी थी अपने घर गंगाजल लेकर जाने के लिए तैयार हो गए। जैसे-जैसे नाव आगे बढ़ती चली जा रही थी और हम सब विद्यार्थी उस नदी में मजा उठा रहे थे और साथ ही जो भी बोतल ले ली थी विद्यार्थियों ने उनमें जल भरने का काम किया हमने शुरू कर दिया था। बहुत ही मजा आ रहा था, उन बोतलों में पानी भरते हुए उस नाव में बैठकर। मैंने अपने लिए कोई बोतल नहीं ली थी पानी भरने के लिए लेकिन जो कि मेरे दोस्तों ने अपने लिए बोतल ले ली थी, मैं उनकी बोतलों में पानी भरने का काम कर रही थी।

हमारे साथ उस नाव पर एक आदमी था, जो हमें उन घाटों की कहानियां सुना रहा था ।उन की महत्ता क्या है ? क्यों उनके लिए फलह फलह का नाम दिए गए हैं ? यह सब उसने हमें बताने का काम किया था। एक सबसे मजेदार किस्सा उसके साथ यह हुआ कि उसने किसी घाट के पास पहुंचते ही हमसे कहा कि हम नदी का पानी उठाएं और अपने अपने जिस्म पर उस पानी को डाल दें यदि हमें पुत्र प्राप्ति की इच्छा हो तो। यहां कहीं ना कहीं या अंधविश्वास जितने भरे पड़े हैं उनका हमें अनुमान लगी रहा था और साथ ही लड़कियों को लेकर इनकी क्या सोचती है वाराणसी में यह भी हमें पता चल रहा था।

जैसे-जैसे नाव आगे बढ़ती चली गई ,कई सारे घाट हमने देखे और साथ ही घाटों पर एक मस्जिद भी हमें देखने को मिली । और यह एक का सबसे अच्छा नजरिया था । जहां पर हिंदुओं के घाट के वहां मुसलमानों की एक मस्जिद थी। जहां हिंदुओं के घाटों पर आरती हो रही है ,उसी जगह पर मुसलमानों की अज़ान भी साथ ही चल रही है।

इन घाटों की एक सबसे मजेदार कहानी मणिकर्णिका घाट की है। इस घाट से संबंधित किस्सा बहुत ही ज्यादा अनोखा रहा और इस किस्से को उसने दो बार दोहराया हमारे लिए। मणिकर्णिका घाट का किस्सा जो है वह शिव पार्वती से संबंधित था और जो कि शिव ने यह श्राप दिया था कि इस जगह पर उन्हें पीड़ा भोगी थी ,इसीलिए उन्होंने कहा था कि इस घाट पर 24 घंटे आग जलती रहेगी यानी की चिता जो है वह जलती रहेगी और इस घाट पर वाराणसी में या फिर आसपास जो भी लोग मर जाते हैं उनकी चिता जगह पर जलाई जाती है। एक साथ कई सारी चिंताओं को जलते हुए शायद हमने पहले कभी नहीं देखा था।

जब सभी घाट देखकर हो गए थे तब हमारी नाव एक रेगिस्तानी जगह पर जाकर रोक दी गई है और जहां पर हमने ऊंट भी देखें। फिर जैसे आरती का समय हो गया तब हमारी नाव भी उन घाट की

तरफ बढ़ने लगी जहां पर आरती की तैयारी की जाने लगी थी। जैसे ही हमारी नाव आगे बढ़ती गई और सभी नाव आकर एक जगह पर रुक चुकी थी और अब इंतजार था तो केवल आरती शुरू होने का और वक्त के साथ आरती भी शुरू हो गई।

आरती का वह माहौल बहुत ही ज्यादा सुंदर रहा। हम नदी में थे और नदी के उस पार जलते दिए लेकर हाथ में जब वे आरती कर रहे थे, मनमोहक अंदाज में भजन गा रहे थे, यह दृश्य बहुत ही ज्यादा सुंदर था। गंगा घाट पर होने वाली आरती को जहां पर हम केवल फिल्मों में देखा करते थे उसे अपने आंखों से हम देख रहे थे ।बहुत ही सुंदर अनुभव रहा इस आरती को अपनी आंखों से देखने का। जैसे ही आरती खत्म हो गई तब हमारी नाव फिर से उस घाट के किनारे चली गई और हम सब उस नाव से उतर गए और रात के भोजन के लिए सब लोग रवाना हो गए।

रात के भोजन के लिए हम फिर उसी होटल आए "द विलेजर्स"..पिछली रात की स्मृतियां जगह पहुंचकर ताजी हो गई। होटल में गाने आज भी लगाए गए थे लेकिन आज पैर थिरकने को तैयार नहीं थे।

आज इस होटल में आने की एक अलग बात यह थी कि आज कई सारे विद्यार्थी इस होटल में आज आ चुके थे हमारी विभागाध्यक्ष भी हमारे साथ थी। खाना खाने के बाद हम सब फिर अपने पैराडाइस रेजीडेंसी होटल में पहुंच गए।

हमें आज्ञा दी गई थी कि अगले दिन हमें सुबह जल्दी उठना होगा। करीब 5:00 बजे आसपास और हमें विश्वनाथ मंदिर जाना है। जो कि सुबह-सुबह वहां दर्शन लेने पड़ते हैं और सुबह जल्दी उठना पड़ेगा क्योंकि वहां लड़कियों को साड़ी पहन कर जाना था। पूरा दिन घूम फिर कर सब थक चुके थे लेकिन अगले दिन की तैयारी करनी भी जरूरी था।मैं अगले दिन की तैयारियों में मशरूफ उतना नहीं हुई थी क्योंकि मैं साड़ी नहीं पहने वाली थी। लेकिन मेरे बाकी दोस्त साड़ी पहनने वाले थे तो उनकी भागा दौड़ी शुरू थी। कौन पहले साड़ी पहनेगा,कौन पहनाएगा , क्या पहनना है और कौन से कपड़े फिर से अपने साथ ले जाने हैं, मंदिर देखने के बाद कैसे क्या होगा यह सब सवाल सबके दिमाग के सामने खड़े थे। अगले दिन की तैयारी करने के बाद सब लोग सो गए और अगली सुबह जल्द से जल्द सब लोग उठ गए थे ,साड़ी पहनकर सभी लड़कियां तैयार हो गई थी और अब हम निकल चुके थे अपने वाराणसी में तीसरे दिन घूमने के लिए।

काशी में बिता तीसरा दिन

फिर हुई नहीं सुबह, नया सवेरा और होटल के नीचे हमारा डेरा। आज जा रहे थे उस मंदिर में जहां जाने के लिए सब में बवाल मचा हुआ था। वाराणसी आने से पहले हर बार कक्षा में इस मंदिर के ही चर्चे हुआ करते थे क्योंकि इस मंदिर की एक अनोखी बात यह थी कि यहां पर भक्तों को दर्शन लेने के लिए साड़ी पहना था।

सुबह-सुबह सभी विद्यार्थी जल्द से जल्द साड़ी पहन कर तैयार हो गए। आज बिना नाश्ता किया ही हम सब निकल गए थे। लेकिन होटल से नाश्ता हमने गाड़ी में लिया हुआ था सोचा था जब मंदिर की सैर कर लेंगे दर्शन कर लेंगे उसके बाद हम सब मिलकर नाश्ता करेंगे ।लेकिन आज का दिन होने वाला था सबसे ज्यादा अनोखा।

हम सब निकले तो थे लेकिन गाड़ियां हमारी आई ही नहीं केवल एक गाड़ी आ चुकी थी और बाकी तीन गाड़ियों का इंतजार हमें करना पड़ा। वक्त बीतता चला गया और धीरे-धीरे गाड़ियां आती चली गई लेकिन फिर भी एक गाड़ी की कमी। तीन गाड़ियां आ चुकी थी और फिर यह निर्णय लिया गया कि 3 गाड़ियां जो है उसमें विद्यार्थी बैठ कर चले जाएंगे एक और गाड़ी जाने वाली थी उसका इंतजार करना अब मुनासिब नहीं था।

जहां पर एक गाड़ी में हम 14 लोग बैठ कर चले जाते थे ,अब उस गाड़ी में लगभग 20 लोग बैठ चुके थे। दिक्कत मुझे किसी बात की नहीं थी क्योंकि मैंने साड़ी नहीं पहनी थी, साड़ी पहनी हुई लड़कियों को दिक्कत हो रही थी क्योंकि उन्हें अपनी साड़ी भी संभालनी थी और इस जगह पर उन्हें बैठना भी था।

इसकी उसकी गोद में बैठकर किसी तरह हम विश्वनाथ मंदिर पहुंच गए। जो भी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन देने जाना चाहते थे वे सभी चले गए और हम रह गए एक दुकान में जहां पर सभी के सामान रखे गए थे । उन लोगों का इंतजार करते हैं कि वे लोग जब आएंगे हम वहां से रवाना होंगे काफी

वक्त बिता चला गया 2 से 3 घंटे हो गए लेकिन फिर भी जो विद्यार्थी मंदिर में दर्शन देने के लिए गए थे वे लौटे ही नहीं । कुछ विद्यार्थी लौट आए और जिस दुकान में हम बैठे थे उस दुकानदार ने हमें उस दुकान से बाहर जाने के लिए कहा। हमें से कुछ विद्यार्थी फिर हमारी एक और शिक्षिका हमने बात की और हम उस जगह से रवाना हुए और एक रिक्शा में बैठकर हम उस जगह चले गए जहां पर गाड़ी खड़ी थी।

जो भी विद्यार्थी विश्वनाथ मंदिर में गए थे, वहां से भोजन कर आ गए और एक अनोखा अनुभव होने करना पड़ा की उनको गाड़ी में ही अपनी साड़ियां बदलनी पड़ी। कुछ विद्यार्थियों ने मंदिर में भोजन तो कर लिया था लेकिन हम कुछ विद्यार्थी ऐसे थे जो सुबह से भूख से तड़प रहे थे ।नाश्ता हमारा गाड़ी में था लेकिन सबके साथ खाने वाले थे नाश्ता इसलिए रखा गया था। जब सब लोग चले आए तब फिर से वहां से गाड़ी हमारी रवाना हुई रामनगर किले की तरफ।

राम नगर किला

जब तक हम सब रामनगर किला पहुंच चुके तब तक दोपहर हो चुकी थी। कुछ गाड़ियां जल्दी पहुंच चुकी थी और कुछ गाड़ियां पीछे ही रह चुकी थी। जब सब लोग आ चुके तब कुछ लोगों को अपनी-अपनी साड़ियां बदलने थी और इसके कारण एक दुकान में कुछ लड़कियों को कपड़े बदलने के लिए समय दिया गया। जैसे ही सबका कपड़े बदलकर हो गया तब एक चौराहे पर जो दुकान थी उसमें सब ने चाय बगैरा पी ली।

उसके बाद सब रामनगर किले की ओर जाने के लिए बड़े । जब रामनगर किले में हम सब प्रवेश करने लगे तो पता चला कि वहां पर प्रवेश करने के लिए कुछ शुल्क लगते हैं।हमसे पूछा गया कि यदि हमें रामनगर किला देखना है तो कई सारे विद्यार्थियों ने मना कर दिया क्योंकि उन्हें ऐसा लगने लगा कि किले में देखने लायक ज्यादा कुछ है नहीं और बाहर से ही थोड़ा बहुत देखकर सभी विद्यार्थी रामनगर किले की ओर से दूसरी जगह यानी कि कुछ मन्दिर देखने के लिए रवाना होने लगे। इस जगह पर हमारा काफी समय चला गया क्योंकि यह फोटो खिंचवाने के लिए विद्यार्थी उत्सुक थे।

यहां एक और अजीब बात यह है कि हमने यहां एक शव को ले जाते हुए देखा था। थोड़ा भय मन में भी उमड़ा था।ऐसी शव यात्रा हमने हमारे गोवा में नहीं देखी थी जहां पर बैंड बाजा लेकर किसी शव को ले जाया जाता हो। पर हर एक जगह की अपनी अपनी अलग अलग परंपराएं होती है और शायद वाराणसी की यही अपनी परंपरा थी। बनारस कविता जो केदारनाथ सिंह ने लिखी थी वह अब समझ आने लगी थी उन्होंने जिस तरह से कहा था कि एक ओर जहां पर शव यात्रा चलती है वहीं दूसरी ओर बारात भी चलती है साथ में और यह हमने अपनी आंखों से देखा था जहां किसी की डोली सजी है तो किसी की मांग उजड़ती है।

रामनगर किले के बाद कुछ मंदिरों में ले जाया गया लेकिन इन मंदिरों में मैं नहीं गई और मैंने यह मंदिर नहीं देखें। मेरे साथ मेरे कुछ और सहेलियां भी थी जो कि इन मंदिरों में नहीं गई थी।

भारत कला भवन

वाराणसी में पहली बार जब हम बनारस हिंदू विश्वविद्यालय देखने के लिए आए थे, उस दिन भी हम भारत कला भवन देखने वाले थे लेकिन कुछ कारणों की वजह से हमें भारत कला भवन देखने का मौका नहीं मिला था । तो आज मौका भी था और दस्तूर भी और यह मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे आज वक्त भी था हमारे पास और यही कारण था कि हम फिर से बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के इलाके में आ चुके थे भारत कला भवन देखने के लिए।

भारत कला भवन, वाराणसी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थित एक चित्रशाला है। यह एशिया का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय संग्रहालय है। यहां की चित्र वीथिका (गैलरी) में 12वीं से 20वीं शती तक के भारतीय लघु चित्र प्रदर्शित हैं। इनके चित्रण में ताड़ पत्र, कागज, कपड़ा, काठ, हाथी दांत आदि का उपयोग किया गया है। प्रदर्शित चित्र भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को प्रकाशित करते हैं। वीथिका में प्रदर्शित चित्रों का क्रम गोविन्द पाल के शासन के चतुर्थ वर्ष (12वीं शती) में चित्रित बौद्ध ग्रंथ 'प्रज्ञापारमिता' से प्रारंभ होता है। लघुचित्रों की विकास गाथा पूर्वी भारत में चित्रित पोथी चित्रों से आरंभ होती है, जिनमें अजंता-भित्ति चित्रों की उत्कृष्ट परम्परा तथा मध्यकालीन कला विशिष्टताओं का अद्भुत समन्वय है।

भारतीय चित्रकला के विषय में यदि कोई भी विद्वान, शोधकर्ता या कलाविद गहन अध्ययन करना चाहे तो यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि उसे वाराणसी में स्थित 'भारत कला भवन' के चित्र संग्रह का अवलोकन करना ही होगा। भारत में प्रचलित लगभग समस्त शैलियों के चित्रों का विशाल संग्रह इस संग्रहालय में है। यहाँ का चित्र संग्रह, विशेषकर लघुचित्रों का विश्व में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है।

भारत कला भवन की स्थापना सन् १९२० में हुई थी। विख्यात कला मर्मज्ञ तथा कलाविद पद्मविभूषण राय कृष्णदास 'भारत कला भवन' संग्रहालय के संस्थापक थे। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन 'भारत कला भवन' के लिए संग्रह हेतु समर्पित कर दिया। उनके जीवन का यही समर्पण और आत्मविश्वास आज 'भारत कला भवन' के रूप में काशी हिंदू विश्वविद्यालय को गौरवान्वित कर रहा है। विभिन्न कला कृतियों के संयोजन में तो उनकी अभिरुचि थी ही, किंतु भारतीय चित्रों के संकलन के प्रति उनकी आत्मीय आस्था थी। यही कारण है कि 'भारत कला भवन' न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लघु चित्रों के संग्रह में अपना एक निजस्व रखता है।

इस संग्रहालय में लगभग बाहर हजार विभिन्न शैलियों के चित्र संकलित हैं। इन सभी चित्रों की अपनी पृथक तथा रोमांचक कहानियाँ हैं। यहाँ केवल उन्हीं चित्रों की चर्चा की जा रही है जो चित्र विश्व में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

भारतीय इतिहास में मुगल चित्रकला एक सुखद संयोग के रूप में दरबारी सभ्यता और भोग-विलास का उल्लास अपने में संचित किए है। मुगल चित्रकला का जन्म अनेक विदेशों और स्वदेशी चित्रकारों के परिश्रम और शिल्पसाधना का परिणाम है। बाबर भारत आते समय जिन पुस्तकों को अपने साथ लाया, उनमें शाहनामा की सचित्र प्रति भी थी। यह प्रति २०० वर्ष तक मुगल कुतुबखाने में रही जो बाद में अंग्रेजों के हाथ चली गई, संयोग से इस शाहनामा के छह महत्वपूर्ण चित्रों का संकलन इस संग्रहालय में सुरक्षित है।

काबुल पर अधिकार (१५५० ई.) करने के पश्चात, हुमायूँ दो विदेशी चित्रकार ख्वाजा अब्दुस्समद तथा मीर सैयद अली को अपने संरक्षण में ईरान से काबुल लाया। इन चित्रकारों ने हुमायूँ की आज्ञा से दास्तान-ए-मीर हम्जा के चित्र बनाना प्रारंभ कर दिये जो पूर्णतया फारसी शैली के थे। इस चित्रावली के लगभग १४०० चित्र बाद में अकबर के समय में बनाए गए। चित्रों के चेहरे की बनावट, प्रकृति तथा पहनावा अधिकांश ईरानी-फारसी ढंग का है। हम्जनामा के १४०० चित्रों में से आज प्रायः १५०-१६० चित्र विश्व में प्राप्त हैं। भारतवर्ष में मात्र पाँच चित्र अवशिष्ट हैं, जिनमें से दो 'भारत कला भवन' संग्रह में हैं। बड़े आकार के (६८×५२से.मी.) ये चित्र सूती कपडे पर अस्तर लगाकर बनाए गए हैं।

पहाडी चित्रों के अंतर्गत जयदेव कृत गीतगोविन्द काव्य पर भी सुंदर चित्र बनाए गए जो यहाँ संग्रहीत हैं। इसमें बसोहली शैली की समस्त विशिष्टताएँ कमल-जैसी लुभावनी आँखें, (प्राथमिक रंगों का प्रयोग) समाहित हैं। कवि भानुदत्त कृत 'रस मंजरी' बसोहली के राजा कृपाल पाल का प्रिय काव्य ग्रंथ था। जिसका सुंदर चित्रण किया गया। 'रस मंजरी' में चित्रित वाग्विदग्धा नायिका चित्र भावाभिव्यंजना, रंग समायोजन एवं उत्कृष्ट कला प्रदर्शन हेतु विश्व प्रसिद्ध है। इस चित्रमाला का (कोलोफन) परिचय पृष्ठ भी कला भवन में विद्यमान है, जो इसके चित्रकार, दाता तथा काल की जानकारी प्रदान करता है। परिवर्ती चित्रकारों ने बारहमासा चित्रावलियों के निर्माण में विशेष रुचि प्रदर्शित की। इन विषयों के अतिरिक्त बसोहली शैली में 'रागमाला' पर आधारित चित्र भी प्राप्त होते हैं, जिनके उदाहरण भी 'भारत कला भवन' में सुरक्षित हैं।

आधुनिक बंगाल शैली के उन्नायक अवनीन्द्र नाथ टैगोर व उनके शिष्य नंदलाल बोस, ए.के हल्दर, एस.एन. डे, ओ.सी. गांगुली, क्षितींद्र नाथ मजूमदार, यामिनी राय तथा गगनेंद्र नाथ टैगोर के चित्रों का संग्रह इस संग्रहालय की अमूल्य निधि है। एस.एन.डे की मेघदूत चित्रावली, ए.एन. टैगोर की अभिसारिका तथा उमर खैयाम, नंदलाल बोस की शिव-पार्वती, प्याऊ, हजरत दराब खाँ एवं चित्रित पोस्टकार्ड 'बंगाल चित्र शैली' की श्रेष्ठ कृतियाँ हैं। हेब्बार, अकबर मदमसी, बेंद्रे, सुल्तान अली, दिनकर कौशिक, एम.एफ, हुसैन, जे.एम. अहिवासी, के.एस. कुलकर्णी, वासुदेव स्मार्त आदि आधुनिक चित्रकारों के चित्र भी इस संग्रहालय की शोभा है।

भारतीय चित्रों के अतिरिक्त 'भारत कला भवन' में नेपाल और तिब्बत में चित्रित पटरा, पोथी चित्र और चित्रित थंकां का भी संग्रह है, जिसमें जय प्रकाश मल्ल कालीन सन १७६५ ई. तिथि युक्त चित्रित तांत्रिक पोथी एवं प्रायः १३-१४वीं ई. शती का रत्नसंभव थंकां उल्लेखनीय है।

विविध माध्यमों- कागज, कपडा, काष्ठ, शीशा, हाथी दाँत, ताड पत्र, अभ्रक तथा चमडे पर चित्रित उक्त सभी शैलियों के चित्र इस संग्रहालय की धरोहर हैं जो आरक्षित संग्रह के अतिरिक्त छवि, निकोलस, रोरिख, एलिस बोनर तथा बनारस वीथिकाओं में प्रदर्शित है।

भारत कला भवन देखने के लिए हमें सबसे ज्यादा वक्त लगा क्योंकि भारत कला भवन में देखने के लिए कई सारी चीजें थी कई सारी वस्तुएं थी। यह पुरा का पुरा भारत कला भवन देखना उस समय में संभव नहीं था इसीलिए हमने अपना अधिक से अधिक समय भारत कला भवन देखने के लिए बिताया।

भारत कला भवन देखने के बाद सभी बच्चों में यही उत्सुकता थी कि अब कहां जाना है और तब हमें खबर मिली कि हमें बनारस खरीदी के लिए ले जाया जा रहा है।एक प्रकार से विद्यार्थियों में बवाल मच गया क्योंकि कुछ विद्यार्थी ऐसे थे जिन्होंने अपने साथ खरीदी के लिए पैसे नहीं लाए थे यानी कि उनके पैसे जो है वह हमारे होटल में थे। हम में से कुछ विद्यार्थी ऐसे ही थे जो हर वक्त अपने पैसे अपने साथ लेकर घूमा करते थे, तो हमें इस बात से कोई अफसोस नहीं था और हम बहुत ज्यादा उत्सुक थे।क्योंकि कुछ विद्यार्थियों के पैसे होटल में थे इसीलिए एक गाड़ी होटल में भिजवा दी गई और वह सारे विद्यार्थी जिन्होंने पैसे नहीं लाए थे, वह होटल गए और उन्होंने अपने पैसे लेकर भी आ गए तब तक हम सब बनारस बाजार की ओर चले गए।

महिलाओं का खरीदारी से एक अनोखा संबंध होता है । खरीदारी करना उनका सबसे पसंदीदा कार्य होता है और यह बात गलत नहीं सही ठहरी जब हम सभी महिला विद्यार्थी बाजार में खरीदारी में जमकर खरीदारी करने लगे। ना वक्त का ख्याल था और ना ही पैसों का खयाल रहा। जो पसंद आने लगा वही खरीदना शुरू हो गया। सबसे पहले तो सभी लोग बनारसी दुपट्टा पर अपनी नजर खड़ा कर बैठे गए थे । उसके बाद साड़ियों पर तो ऐसी पैठ जमा कर बैठ गए थे। यह हमारा अधिक से अधिक समय खरीदारी में उस वक्त साड़ियां लेने में बीत गया था।

शुरू शुरू में सभी एक साथ घूम रहे थे खरीदारी करने के लिए लेकिन फिर सबकी पसंद, ना पसंद

अलग अलग होने लगी किसी को साड़ियां चाहिए थी , तो किसी को कुछ और, और यही कारण था कि हम सब अलग अलग हो गए और सब अपनी अपनी खरीदारी करने लगे।अलग अलग होने का मतलब यह नहीं कि हम अकेले अकेले घूमने लगे, हम फिर भी एक जुट में घूम रहे थे क्योंकि वह बाजार वह माहौल हमारे लिए नया था । वह इलाका हमारे लिए नया था और ऐसे में अकेले घूमना हमारे लिए सही नहीं होता।

बहुत कुछ खरीदारी हो चुकी थी और वक्त भी बीतता चला जा रहा था। अंधेरा होता चला जा रहा था। लेकिन किसी का भी मन खरीदारी रोकने का नहीं था लेकिन फिर भी हमें अपनी खरीदारी रोकनी पड़ी। सभी लोग खरीदारी में ऐसे मगन हो गए थे कि किसी को ना भूख लग रही थी और ना ही किसी के पैर दुख रहे थे वरना तो वह हमारे नखरे बहुत सारे होते थे।

घर के लोगों के लिए, अपने दोस्तों के लिए ,अपने लिए, फिर ना जाने किसे चाची के लिए, चाचा के लिए, मौसी, फूफा न जाने किन-किन के लिए सब लोग खरीदारी करने लगे।

एक खास बात इनके बाजार किया था कि यहां पर वस्तुएं कम कीमत पर बेची जा रही थी । जहां पर हमें गोवा में बहुत ज्यादा महंगी चीजें मिल जाती है ,वही यहां पर हमें कम दाम में चीजें मिल रही थी। मैंने तो सबसे पहले अपनी बहनों के लिए कुर्ते लिए थे ,फिर अपनी मां के लिए एक बटवा लिया था और भी बहुत सारी चीजें जो धीरे धीरे मेरे खरीदारी में जुड़ती चली गई थी।

जैसे-जैसे खरीदारी खत्म होती चली गई वैसे-वैसे भूख का एहसास भी होने लगा था और यही वह समय था जब हमने बाजार में बनारस वाली भेल पूरी खाई थी। इतनी तीखी, इतने स्वादिष्ट भेल पुरी शायद ही मैंने कभी अपने जीवन में खाई हो।

और फिर जब सब की खरीदारी खत्म हो गई ,सब लोग भूख से बेहाल होने लगे तब होटल में भोजन करने का निर्णय लिया गया और किस होटल में जाकर भोजन किया जाए इस बात पर बहुत ज्यादा बहस चलती रही। फिर सभी का प्रस्ताव यह रहा कि द विलेजस जो एक होटल है जहां पर हम पहले दिन से ही भोजन करते आ रहे हैं, सभी वहीं चले जाते हैं और भोजन करते हैं । खरीदारी के बाद भोजन करने हम चले गए और भोजन के बाद हम सीधे अपने अपने होटल रवाना हो गए और क्योंकि इतना थक गए थे कि नींद तो आनी ही थी लेकिन फिर भी थोड़ी मस्ती मजाक चलता रहा। माहौल बनता चला गया और अगले दिन फिर उठना था क्योंकि हम अगले दिन बिहार के लिए रवाना होने वाले थे।

एक मन में उत्सुकता यह भी थी कि हम उत्तर प्रदेश से बिहार जाने वाले हैं । हमारे लिए एक बस का आयोजन भी किया गया है । जिसमें बैठकर हम पूरे 1 दिन का सफर तय करेंगे और अगले दिन हम बिहार पहुंच जाएंगे। इसका मतलब यह था कि आज की रात हमारे लिए बनारस में हमारी आखिरी रात थी। यह तो हम थक चुके थे लेकिन फिर भी अपना सामान बटोर ना, इकट्ठा करना अपने बैग ठीक करें से भर कर रखना यह भी हमारे लिए एक चुनौती थी । अपना सामान भरना

आसान काम नहीं था।

हमारे कमरे में जहां मैं, योगिता और चिनमई रहते थे, हमने तो पूरे कमरे में अपना सामान इस तरह से फैला कर रखा था जैसे कि पूरा का पूरा महीना हमें ही डेरा मारने वाले हैं। योगिता ने अपना सामान ठीक तरह से रखा था लेकिन मैं और चिन्मयी ऐसे दो प्राणी थे इस कमरे में जो सुनियोजित बिल्कुल भी नहीं थे। और हमें देर तक बैठकर अपना सामान इकट्ठा करना पड़ा अपनी बैग भरनी पड़ी।अब हमारा हो गया तब हम जाकर चैन से सो पाए लेकिन फिर भी बहुत सारी चीजें ऐसी थी जो अभी भी हमें भरना था।

अगले दिन चुकी हमें कहीं जाना नहीं था इसलिए हम सब काफी देर से उठे थे और फिर अचानक से हमें खबर मिली कि जिन लोगों को खरीदारी करने जाना है फिर से बाजार, उन्हें 10 मिनट के अंदर अंदर नीचे बुलाया गया है। यह बात ऐसी थी जैसे नेकी और पूछ पूछ।खरीदारी के लिए और हम मना करें ऐसा हो ही नहीं सकता । झट से हम अपने कमरे से निकल गए और नीचे जाकर खड़े हो गए क्योंकि हमें फिर से खरीदारी के लिए जाना था।इस बार सभी विद्यार्थी नहीं थे खरीदारी के लिए जो जाना चाहते थे केवल वही थे और हमारे साथ केवल हमारे एक ही शिक्षक थे।

योजना ऐसी बनेगी हम एक एकजुट बनाकर एक साथ घूमेंगे। हमारे शिक्षक जो है वह दूसरी ओर रहेंगे और हम दूसरी ओर लेकिन हमें यह बाजार अब पता चल चुका था तो हम एकजुट में सभी लड़कियां खरीदारी करेंगे। फिर से खरीदारी शुरू हो गई और हमने कई सारी खरीदारी की है और फिर जैसे ही खरीदारी हमारी खत्म हो गई या यह कह सकते हैं कि जो हमें वक्त दिया गया था खरीदारी करने के लिए जैसे ही वह समाप्त होने लगा हम सब जिस जगह पर हमें हमारे शिक्षक ने कहा था खरीदारी के बाद वहां इकट्ठा होने के लिए जा ही रहे थे।

कि इतने में एक ऐसी घटना घटी जहां पर हमारी सहपाठी प्रिया का मोबाइल किसी ने चुरा लिया।इस घटना के बाद सभी का दिल जैसे बैठ गया था । घर से दूर होकर किसी का मोबाइल गुम हो जाना यह बहुत ही बुरी बात थी क्योंकि हम जानते थे कि हमें सफर में मोबाइल की कितनी ज्यादा आवश्यकता थी।फिर हमारी शिक्षक के साथ हमने इस बारे में बात की, उन्हें बताया गया कि प्रिया का मोबाइल है वह चोरी हो गया है लेकिन किया कुछ भी नहीं जा सकता था क्योंकि वह खुद नहीं जानती थी कि आखिर उसका मोबाइल कब और कैसे किसने निकाला है।

खरीदारी के बाद हम सब फिर से अपने होटल पहुंच गए और हमारे कमरे जो है वह हमें खाली करने पड़े थे और हमारे सभी लोगों की जो सामान था वह हमारी विभागाध्यक्ष के कमरे में हमें रखना पड़ा था।

सब लोग अपनी अपनी तैयारियों में मगन थे। उनकी हम सबको बिहार के लिए रवाना होना था जब बस का इंतजाम हो चुका था तब हमें अपना सामान लेकर होटल से बाहर निकलने की आज्ञा दी गई थी।इस वक्त हुआ यह कि कुछ लोग आगे निकल गए और कुछ लोग पीछे अलग-अलग रास्तों

से जाने के कारण, कुछ लोग जल्दी बस तक पहुंच गए और कुछ लोग बस तक पहुंचने के लिए उन्हें देर लगी। देर से पहुंचने की यही एक दुविधा थी कि बस में हमें जगह पकड़ने की और बस तक देर से पहुंचने वालों में हम भी थे। जब हम बस में चढ़ गए तब हमें देखा कि आगे वाली सारी सीटें जो है वह पहले से ही सब लोग में संभाल कर रखी है और अब बची थी केवल पीछे वाली सीट। बस की सबसे आखिरी सीट वह हमने ले लिया और हम सब दोस्त जाकर हम पीछे बैठ गए। बस में जगह कम थी और विद्यार्थी को ज्यादा थे और यह सफर तो 2 दिन का सफर था। एक और आधा दिन हमें बस में सफर करना था। रात भी हमें बस में ही गुजारनी थी।

जब हमारी विभागाध्यक्ष ने होटल के कर्मचारियों से बात की कि आखिर जब उन्हें पता था कि हमारे विद्यार्थी ज्यादा है तो कम सीटों वाली बस में क्यों दी गई, तब पता चला कि उत्तर प्रदेश में उसे बड़ी बस और है ही नहीं। जैसे तैसे हम सब विद्यार्थी बैठ गए और हमारा सफर बिहार के लिए शुरू हो गया।

बस के सबसे पिछली सीट पर बैठकर सफर करना आसान नहीं था क्योंकि हर 2 मिनट से हम उछलते जा रहे थे।कमर तो जैसे हमारी टूटी गई थी लेकिन क्या करें इसके अलावा हमारे पास और कोई चारा भी नहीं था।जैसे तैसे वक्त बिता चला गया और रात होते होते हम बिहार तक पहुंच गए थे । बिहार में एक ढाबे के पास हम रुके भोजन किया और फिर से बस में सफर करना शुरू हो गया।

बस में एक घटना यह घटी हमारे एक दोस्त के साथ, कि जिस बस की खिड़की के पास वह बैठी थी, वह खिड़की ना जाने कैसे अपने आप फूट गए। कांच के टुकड़े यहां वहां गिर गए और वह थोड़ा भयभीत हो गए। बस में भी भय का माहौल छा गया था और जो कि मैं खिड़की के पास बैठी थी तो मुझे और ज्यादा डर लगने लगा था।यह तो हमने अपने खिड़कियों पर पर्दे डाल दिए थे क्योंकि बिहार के उन सड़कों पर ना रास्तों पर बिजली थी और वह खेती वाले इलाके रात को देखने के लिए बहुत ही ज्यादा भयंकर दिख रहे थे।कैसे बस में रात गुजरी कुछ पता ही ना चला। ऐसे वैसे किसी तरह से हमने अपनी रात गुजारी और करीब 5:00 बजे हमें सुबह सुबह बस से उठना पड़ा और मुंह धो कर हमें उन जगहों के लिए रवाना होना पड़ा एक रिक्शा में बैठकर। इसके लिए हमने खास यूपी से बिहार तक का सफर तय किया था।

सुबह-सुबह मुह हाथ धोकर हमें बोधगया जाने के लिए तैयार किया गया और रिक्शा का इंतजाम किया गया था ।हमारे जो बस थी इन संकिर्ण गलियों में नहीं जा पा रही थी जिसके कारण हमें रिक्शा का इंतजाम करना पड़ा और एक रिक्शा में लगभग छह सात लोग बैठकर हम बोधगया के लिए रवाना हुए। करीब 5:30 बजे के आसपास हमें बोधगया के लिए लेकर गए ।

रिक्शा में सफर करना एक बहुत या अनोखा अनुभव रहा अलग ही गीत, इन रिक्शाओं में लगाए गए थे। बिहारी गीत हमें इन्हे कह सकते हैं । बहुत ही जोर शोर से इन गीतों को बजाया जा रहा था

और हमारी हालत रिक्शा में बुरी हो रही है । फिर लेकिन मजा भी बहुत आ रहा था। जब हम बोधगया पहुंच गए तो एक अलग ही वातावरण में वहां देखने को मिला। एक भक्ति का वातावरण था वहां।और उस जगह की एक खास बात यह थी कि वहां पर मोबाइल ,कैमरा, अपना सामान सभी वहां वर्जित था । वहां हम अपने साथ कुछ भी नहीं लेकर जा सकते थे और शुरू से लेकर न जाने कितनी बार हमारी तलाशी ली गई थी।

बोध गया -

बिहार की राजधानी पटना के दक्षिणपूर्व में लगभग 101 ० किलोमीटर दूर स्थित बोधगया गया जिले से सटा एक छोटा शहर है। बोधगया में बोधि पेड़ के नीचे तपस्या कर रहे भगवान गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। तभी से यह स्थल बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्ष २००२ में यूनेस्को द्वारा इस शहर को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।

करीब ५०० ई॰पू. में गौतम बुद्ध फाल्गु नदी के तट पर पहुंचे और बोधि पेड़ के नीचे तपस्या कर्ने बैठे। तीन दिन और रात के तपस्या के बाद उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिस्के बाद से वे बुद्ध के नाम से जाने गए। इसके बाद उन्होंने वहां ७ हफ्ते अलग अलग जगहों पर ध्यान करते हुए बिताया और फिर सारनाथ जा कर धर्म का प्रचार शुरू किया। बुद्ध के अनुयायिओं ने बाद में उस जगह पर जाना शुरू किया जहां बुद्ध ने वैशाख महीने में पुर्णिमा के दिन ज्ञान की प्रप्ति की थी। धीरे धीरे ये जगह बोधाया के नाम से जाना गया और ये दिन बुद्ध पुर्णिमा के नाम से जाना गया।

लगभग 528 ई॰ पू. के वैशाख (अप्रैल-मई) महीने में कपिलवस्तु के राजकुमार गौतम ने सत्य की खोज में घर त्याग दिया। गौतम ज्ञान की खोज में निरंजना नदी के तट पर बसे एक छोटे से गांव उरुवेला आ गए। वह इसी गांव में एक पीपल के पेड़ के नीचे ध्यान साधना करने लगे। एक दिन वह ध्यान में लीन थे कि गांव की ही एक लड़की सुजाता उनके लिए एक कटोरा खीर तथा शहद लेकर आई। इस भोजन को करने के बाद गौतम पुन: ध्यान में लीन हो गए। इसके कुछ दिनों बाद ही उनके अज्ञान का बादल छट गया और उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। अब वह राजकुमार सिद्धार्थ या तपस्वी गौतम नहीं थे बल्कि बुद्ध थे। बुद्ध जिसे सारी दुनिया को ज्ञान प्रदान करना था। ज्ञान प्राप्ति के बाद वे अगले सात सप्ताह तक उरुवेला के नजदीक ही रहे और चिंतन मनन किया। इसके बाद बुद्ध वाराणसी के निकट सारनाथ गए जहां उन्होंने अपने ज्ञान प्राप्ति की घोषणा की। बुद्ध कुछ महीने बाद उरुवेला लौट गए। यहां उनके पांच मित्र अपने अनुयायियों के साथ उनसे मिलने आए और उनसे दीक्षित होने की प्रार्थना की। इन लोगों को दीक्षित करने के बाद बुद्ध राजगीर चले गए। इसके बुद्ध के उरुवेला वापस लौटने का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के बाद उरुवेला का नाम इतिहास के पन्नों में खो जाता है। इसके बाद यह गांव सम्बोधि, वैजरसना या महाबोधि नामों से जाना जाने लगा। बोधगया शब्द का उल्लेख 18 वीं शताब्दी से मिलने लगता है।

विश्वास किया जाता है कि महाबोधि मंदिर में स्थापित बुद्ध की मूर्त्ति संबंध स्वयं बुद्ध से है। कहा जाता है कि जब इस मंदिर का निर्माण किया जा रहा था तो इसमें बुद्ध की एक मूर्त्ति स्थापित करने का भी निर्णय लिया गया था। लेकिन लंबे समय तक किसी ऐसे शिल्पकार को खोजा नहीं जा सका जो बुद्ध की आकर्षक मूर्त्ति बना सके। सहसा एक दिन एक व्यकती आया और उसे मूर्त्ति बनाने की इच्छा जाहिर की। लेकिन इसके लिए उसने कुछ शर्त्तें भी रखीं। उसकी शर्त्त थी कि उसे पत्थर का एक स्तम्भ तथा एक लैम्प दिया जाए। उसकी एक और शर्त्त यह भी थी इसके लिए उसे छ: महीने का समय दिया जाए तथा समय से पहले कोई मंदिर का दरवाजा न खोले। सभी शर्त्तें मान ली गई लेकिन व्यग्र गांववासियों ने तय समय से चार दिन पहले ही मंदिर के दरवाजे को खोल दिया। मंदिर के अंदर एक बहुत ही सुंदर मूर्त्ति थी जिसका हर अंग आकर्षक था सिवाय छाती के। मूर्त्ति का छाती वाला भाग अभी पूर्ण रूप से तराशा नहीं गया था। कुछ समय बाद एक बौद्ध भिक्षु मंदिर के अंदर रहने लगा। एक बार बुद्ध उसके सपने में आए और बोले कि उन्होंने ही मूर्त्ति का निर्माण किया था। बुद्ध की यह मूर्त्ति बौद्ध जगत में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त मूर्त्ति है। नालन्दा और विक्रमशिला के मंदिरों में भी इसी मूर्त्ति की प्रतिकृति को स्थापित किया गया है।

महाबोधि मन्दिर

बिहार में इसे मंदिरों के शहर के नाम से जाना जाता है। इस गांव के लोगों की किस्मत उस दिन बदल गई जिस दिन एक राजकुमार ने सत्य की खोज के लिए अपने राजसिहासन को ठुकरा दिया। बुद्ध के ज्ञान की यह भूमि आज बौद्धों के सबसे बड़े तीर्थस्थल के रूप में प्रसिद्ध है। आज विश्व के हर धर्म के लोग यहां घूमने आते हैं। पक्षियों की चहचहाट के बीच बुद्धम्-शरनम्-गच् छामि की हल्की ध्वनि अनोखी शांति प्रदान करती है। यहां का सबसे प्रसिद्ध मंदिर महाबोधि मंदिर' है। विभिन्न धर्म तथा सम्प्रदाय के व्यकति इस मंदिर में आध्यात्मिक शांति की तलाश में आते हैं। इस मंदिर को यूनेस्को ने २००२ में वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया था। बुद्ध के ज्ञान प्रप्ति के २५० साल बाद राजा अशोक बोधगया गए। माना जाता है कि उन्होंने महाबोधि मन्दिर का निर्माण कराया। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि पह्ली शताब्दी में इस मन्दिर का निर्माण कराया गया या उस्की मरम्मत कराई गई।

हिन्दुस्तान में बौद्ध धर्म के पतन के साथ साथ इस मन्दिर को लोग भूल गए थे और ये मन्दिर धूल और मिट्टी में दब गया था। १९वीं सदी में Sir Alexander Cunningham ने इस मन्दिर की मरम्मत कराई। १८८३ में उन्होंने इस जगह की खुदाई की और काफी मरम्मत के बाद बोधगया को अपने पुराने शानदार अवस्था में लाया गया।

यह मंदिर मुख्य मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर की बनावट सम्राट अशोक द्वारा स्थापित स्तूप के समान हे। इस मंदिर में बुद्ध की एक बहुत बड़ी मूर्त्ति स्थापित है। यह मूर्त्ति पदमासन की मुद्रा में है। यहां यह अनुश्रुति प्रचिलत है कि यह मूर्त्ति उसी जगह स्थापित है जहां बुद्ध को ज्ञान निर्वाण (ज्ञान) प्राप्त हुआ था। मंदिर के चारों ओर पत्थर की नक्काशीदार रेलिंग बनी हुई

है। ये रेलिंग ही बोधगया में प्राप्त सबसे पुराना अवशेष है। इस मंदिर परिसर के दक्षिण-पूर्व दिशा में प्राकृतिक दृश्यों से समृद्ध एक पार्क है जहां बौद्ध भिक्षु ध्यान साधना करते हैं। आम लोग इस पार्क में मंदिर प्रशासन की अनुमति लेकर ही प्रवेश कर सकते हैं।

इस मंदिर परिसर में उन सात स्थानों को भी चिन्हित किया गया है जहां बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद सात सप्ताह व्यतीत किया था। जातक कथाओं में उल्लेखित बोधि वृक्ष भी यहां है। यह एक विशाल पीपल का वृक्ष है जो मुख्य मंदिर के पीछे स्थित है। कहा जाता बुद्ध को इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। वर्तमान में जो बोधि वृक्ष वह उस बोधि वृक्ष की पांचवीं पीढी है। मंदिर समूह में सुबह के समय घण्टों की आवाज मन को एक अजीब सी शांति प्रदान करती है।

मुख्य मंदिर के पीछे बुद्ध की लाल बलुए पत्थर की 7 फीट ऊंची एक मूर्त्ति है। यह मूर्त्ति विजरासन मुद्रा में है। इस मूर्त्ति के चारों ओर विभिन्न रंगों के पताके लगे हुए हैं जो इस मूर्त्ति को एक विशिष्ट आकर्षण प्रदान करते हैं। कहा जाता है कि तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में इसी स्थान पर सम्राट अशोक ने हीरों से बना राजसिहांसन लगवाया था और इसे पृथ्वी का नाभि केंद्र कहा था। इस मूर्त्ति की आगे भूरे बलुए पत्थर पर बुद्ध के विशाल पदचिन्ह बने हुए हैं। बुद्ध के इन पदचिन्हों को धर्मचक्र प्रर्वतन का प्रतीक माना जाता है।

बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद दूसरा सपताह इसी बोधि वृक्ष के आगे खड़ा अवस्था में बिताया था। यहां पर बुद्ध की इस अवस्था में एक मूर्त्ति बनी हुई है। इस मूर्त्ति को अनिमेश लोचन कहा जाता है। मुख्य मंदिर के उत्तर पूर्व में अनिमेश लोचन चैत्य बना हुआ है।

बोधि वृक्ष

बोधि वृक्ष बिहार राज्य के गया जिले में बोधगया स्थित महाबोधि मंदिर परिसर में स्थित एक पीपल का वृक्ष है। इसी वृक्ष के नीचे ईसा पूर्व 531 में भगवान बुद्ध को बोध (ज्ञान) प्राप्त हुआ था।

बोधि' का अर्थ होता है 'ज्ञान', 'बोधि वृक्ष' का अर्थ है ज्ञान का वृक्ष।

बोधि वृक्ष को नष्ट करने का प्रयास-

पहली कोशिश

कहा जाता है कि बोधिवृक्ष को सम्राट अशोक की एक वैश्य रानी तिष्यरक्षिता ने चोरी-छुपे कटवा दिया था। यह बोधिवृक्ष को कटवाने का सबसे पहला प्रयास था। रानी ने यह काम उस वक्त किया जब सम्राट अशोक दूसरे प्रदेशों की यात्रा पर गए हुए थे।

मान्यताओं के अनुसार रानी का यह प्रयास विफल साबित हुआ और बोधिवृक्ष नष्ट नहीं हुआ। कुछ ही सालों बाद बोधिवृक्ष की जड़ से एक नया वृक्ष उगकर आया, उसे दूसरी पीढ़ी का वृक्ष माना जाता है, जो तकरीबन 800 सालों तक रहा।

गौरतलब है कि सम्राट अशोक ने अपने बेटे महेन्द्र और बेटी संघमित्रा को सबसे पहले बोधिवृक्ष की टहनियों को देकर श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार करने भेजा था। महेन्द्र और संघिमित्रा ने जो बोधिवृक्ष श्रीलंका के अनुराधापुरम में लगाया था वह आज भी मौजूद है।

दूसरी कोशिश

दूसरी बार इस पेड़ को बंगाल के राजा शशांक ने बोधिवृक्ष को जड़ से ही उखड़ने की ठानी। लेकिन वे इसमें असफल रहे। कहते हैं कि जब इसकी जड़ें नहीं निकली तो राजा शशांक ने बोधिवृक्ष को कटवा दिया और इसकी जड़ों में आग लगवा दी। लेकिन जड़ें पूरी तरह नष्ट नहीं हो पाईं। कुछ सालों बाद इसी जड़ से तीसरी पीढ़ी का बोधिवृक्ष निकला, जो तकरीबन 1250 साल तक मौजूद रहा।

तीसरी बार

तीसरी बार बोधिवृक्ष साल 1876 प्राकृतिक आपदा के चलते नष्ट हो गया। उस समय लार्ड कानिंघम ने 1880 में श्रीलंका के अनुराधापुरम से बोधिवृक्ष की शाखा मांगवाकर इसे बोधगया में फिर से स्थापित कराया। यह इस पीढ़ी का चौथा बोधिवृक्ष है, जो आज तक मौजूद है।

मुख्य मंदिर का उत्तरी भाग चंकामाना नाम से जाना जाता है। इसी स्थान पर बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद तीसरा सप्ताह व्यतीत किया था। अब यहां पर काले पत्थर का कमल का फूल बना हुआ है जो बुद्ध का प्रतीक माना जाता है।

महाबोधि मंदिर के उत्तर पश्चिम भाग में एक छतविहीन भग्नावशेष है जो रत्नाघारा के नाम से जाना जाता है। इसी स्थान पर बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद चौथा सप्ताह व्यतीत किया था। दन्तकथाओं के अनुसार बुद्ध यहां गहन ध्यान में लीन थे कि उनके शरीर से प्रकाश की एक किरण निकली। प्रकाश की इन्हीं रंगों का उपयोग विभिन्न देशों द्वारा यहां लगे अपने पताके में किया है।

माना जाता है कि बुद्ध ने मुख्य मंदिर के उत्तरी दरवाजे से थोड़ी दूर पर स्थित अजपाला-निग्रोधा वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्ति के बाद पांचवा सप्ताह व्यतीत किया था। बुद्ध ने छठा सप्ताह महाबोधि मंदिर के दायीं ओर स्थित मूचालिंडा क्षील के नजदीक व्यतीत किया था। यह क्षील चारों तरफ से वृक्षों से घिरा हुआ है। इस क्षील के मध्य में बुद्ध की मूर्त्ति स्थापित है। इस मूर्त्ति में एक विशाल सांप बुद्ध की रक्षा कर रहा है। इस मूर्त्ति के संबंध में एक दंतकथा प्रचलित है। इस कथा के अनुसार बुद्ध

प्रार्थना में इतने तल्लीन थे कि उन्हें आंधी आने का ध्यान नहीं रहा। बुद्ध जब मूसलाधार बारिश में फंस गए तो सांपों का राजा मूचालिंडा अपने निवास से बाहर आया और बुद्ध की रक्षा की।

इस मंदिर परिसर के दक्षिण-पूर्व में राजयातना वृक्ष है। बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना सांतवा सप्ताह इसी वृक्ष के नीचे व्यतीत किया था। यहीं बुद्ध दो बर्मी (बर्मा का निवासी) व्यापारियों से मिले थे। इन व्यापारियों ने बुद्ध से आश्रय की प्रार्थना की। इन प्रार्थना के रूप में बुद्धमं शरणम गच्छामि (मैं अपने को भगवान बुद्ध को सौंपता हू) का उच्चारण किया। इसी के बाद से यह प्रार्थना प्रसिद्ध हो गई।

तिब्बतियन मठ

महाबोधि मंदिर के पश्चिम में पांच मिनट की पैदल दूरी पर स्थित) जोकि बोधगया का सबसे बड़ा और पुराना मठ है 1934 ई॰ में बनाया गया था। बर्मी विहार (गया-बोधगया रोड पर निरंजना नदी के तट पर स्थित) 1936 ई॰ में बना था। इस विहार में दो प्रार्थना कक्ष है। इसके अलावा इसमें बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा भी है। इससे सटा हुआ ही थाई मठ है (महाबोधि मंदिर परिसर से 1किलोमीटर पश्चिम में स्थित)। इस मठ के छत की सोने से कलई की गई है। इस कारण इसे गोल्डेन मठ कहा जाता है। इस मठ की स्थापना थाईलैंड के राजपरिवार ने बौद्ध की स्थापना के 2500 वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में किया था। इंडोसन-निप्पन-जापानी मंदिर (महाबोधि मंदिर परिसर से 11.5 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में स्थित) का निर्माण 1972-73 में हुआ था। इस मंदिर का निर्माण लकड़ी के बने प्राचीन जापानी मंदिरों के आधार पर किया गया है। इस मंदिर में बुद्ध के जीवन में घटी महत्वपूर्ण घटनाओं को चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है। चीनी मंदिर (महाबोधि मंदिर परिसर के पश्‍िचम में पांच मिनट की पैदल दूरी पर स्थित) का निर्माण 1945 ई॰ में हुआ था। इस मंदिर में सोने की बनी बुद्ध की एक प्रतिमा स्थापित है। इस मंदिर का पुनर्निर्माण 1997 ई॰ किया गया था। जापानी मंदिर के उत्तर में भूटानी मठ स्थित है। इस मठ की दीवारों पर नक्काशी का बेहतरीन काम किया गया है। यहां सबसे नया बना मंदिर वियतनामी मंदिर है। यह मंदिर महाबोधि मंदिर के उत्तर में 5 मिनट की पैदल दूरी पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण 2002 ई॰ में किया गया है। इस मंदिर में बुद्ध के शांति के अवतार अवलोकितेश्वर की मूर्त्ति स्थापित है।

इन मठों और मंदिरों के अलावा के कुछ और स्मारक भी यहां देखने लायक है। इन्हीं में से एक है भारत की सबसे ऊंचीं बुद्ध मूर्त्ति जो कि 6 फीट ऊंचे कमल के फूल पर स्थापित है। यह पूरी प्रतिमा एक 10 फीट ऊंचे आधार पर बनी हुई है। स्थानीय लोग इस मूर्त्ति को 80 फीट ऊंचा मानते हैं।

बोधगया देखने के बाद सभी लोग राम जानकी मंदिर भी देखने के लिए चले गए और हमें से कुछ लोग बाहरी बैठ गए थे क्योंकि हम बुरी तरह से थक जो कहते हैं बस की पिछली सीट पर बैठकर सफर करना और जहां पर हमारी नींद भी पूरी ना हुई हो और सुबह-सुबह घूमना हमारे लिए आसान नहीं था इसीलिए हम राम जानकी मंदिर के बाहर ही बैठ गए थे।

जब बोधगया हमारा घूमकर हो गया तब वहां से हमारी बस जो है वह अगले स्थान के लिए रवाना हो चुकी थी , लेकिन हुआ यह कि न जाने कैसे मुझे बस में नींद लग चुकी थी और पूरी रात हम सो नहीं पाए थे तो दोपहर का वक्त था और नींद लग गई और हम सो गए थे और इस दौरान हमारे कुछ साथी कुछ अलग दूसरे मंदिर में हो कर आ गए।

हालत अब जो है वह बहुत ज्यादा खराब होती चली जा रही थी क्योंकि ऐसा था कि हमने पहले दिन दोपहर को खाना नहीं खाया था। फिर शाम को तो कुछ खाने मिला नहीं था ।रात को भी जब होटल के पास वह गाड़ी रुकी थी ,तब हमने बस में हमारे लिए ही कुछ चीज है जो हमने घर से लाई थी उसे हमने कुछ बनाया और हमने खा लिया था क्योंकि हमें पता चला था कि उस होटल का खाना जो है वह बहुत ही घटिया था। अब ना सुबह में नाश्ता किया था और ना ही कुछ पेट में हमारे पड़ा था । दोपहर का समय हो चला था और पेट में चूहे दौड़ने लगे थे।लेकिन फिर हमारी बस जो है वह फिर रवाना हुई और इस बार हम जा रहे थे पटना नालंदा की ओर यह निर्णय लिया गया था कि अगर हमें रास्ते में कोई होटल में जाता है तब हम वहां रुककर भोजन कर लेंगे।

लेकिन जैसे-जैसे हम आगे आगे बढ़ने लगे वैसे हमें कोई भी होटल नहीं आते पर नजर आने लगा

।हमारी हालत बहुत ही खराब होने लगी थी ।सभी विद्यार्थियों सभी शिक्षक भूख से बेहाल होते जा रहे थे। जो भी चीजें उनके पास थी वह खाना पीना शुरू हो गया था। लेकिन फिर भी खाने की भूख खाने से ही मिटती है। अब यह हुआ कि जो हम पिछली सीट पर बैठे थे हमें हमारी विभागाध्यक्ष है हमारी हर जगह थी वह बदलने का आदेश दे दिया और जो विद्यार्थी आगे वाली सीट पर बैठे थे उन्हें हमारी पिछली सीट पर बैठने की आज्ञा दी गई थी और इसी बहाने हम आगे आकर बैठ गए लेकिन फिर भी हमें जगह कम पड़ गई थी इसीलिए दो लोगों की जगह पर हम तीन लोग यानी कि मैं, चिन्मयी और सुहास तीनों बैठ चुके थे।

सफर आगे बढ़ता चला गया और अचानक से हमें एक होटल नजर आया। भूख से बेहाल हम सभी विद्यार्थी उस हॉटल में घुस गए और हमारे लिए खाना बनाया गया और कई दिनों से भूखे रहते हैं उस प्रकार से हम सब ने भोजन किया। भोजन करने के बाद हम पटना के लिए बस में बैठकर रवाना हो गए। पूरा बिहार का माहौल बहुत ही ज्यादा खूबसूरत लगने लगा। वादियां खुली और वह रास्ता कुछ ज्यादा ही सुंदर था। उत्तर प्रदेश से ज्यादा मुझे बिहार का माहौल अधिक पसंद आया क्योंकि यह वादियां, पहाड़ ,खुली हवाएं यह सब हमें हमारे गोवा में देखने में नहीं और ना ही हमने उत्तर प्रदेश में देखा था इतनी सुंदरता देखकर हमारा मन मोह गया था।

अब हमारी मंज़िल थी नालंदा विश्वविद्यालय। सफर आगे बढ़ता गया और शाम होते होते हम नालंदा विश्वविद्यालय पहुंच गए। स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष में ही हमने हिंदी कहानी जो पेपर हमें लगाया गया था उसमें " नालंदा पर गिद्ध" कहानी पढ़ी थी। तब से इस जगह को देखने की, जानने की जिज्ञासा हो रही थी। तब किसने सोचा था कि जिन जगहों के बारे में हम किताबो में पढ़ते आए है एक दिन प्रत्यक्ष रूप से देखेंगे। यही तो ज़िन्दगी हैं, होता वही है जो कभी सोचा नहीं।

नालंदा विश्वविधालय पहुंचते ही हमें प्रवेश शुल्क देना पड़ा। जिसके उपरांत टिकट लेकर हमें नालंदा विश्वविद्यालय में प्रवेश करने मिला। नालंदा विश्वविद्यालय देखने के लिए हमने एक गाइड भी के रखा था जो हमें नालंदा विश्वविधालय से जुड़ी जानकारी से अवगत कर रहा था।

देखने को तो यह विश्वविद्यालय किसी टूटी फूटी खंडर से कम नहीं लगता पर यह टूटी फूटी इमारतें बहुत कुछ राज़ अपने में छिपाए हुए है।

यह प्राचीन दरबे में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात केन्द्र था। महायान बौद्ध धर्म के इस शिक्षा-केन्द्र में हीनयान बौद्ध-धर्म के साथ ही अन्य धर्मों के तथा अनेक देशों के छात्र पढ़ते थे। वर्तमान बिहार राज्य में पटना से ८८.५ किलोमीटर दक्षिण-पूर्व और राजगीर से ११.५ किलोमीटर उत्तर में एक गाँव के पास राहुल द्वारा खोजे गए इस महान बौद्ध विश्वविद्यालय के भग्नावशेष इसके प्राचीन वैभव का बहुत कुछ अंदाज़ करा देते हैं। अनेक पुराभिलेखों और सातवीं शताब्दी में दरबे के इतिहास को पढ़ने आया था के लिए आये चीनी यात्री ह्वेनसांग तथा इत्सिंग के यात्रा विवरणों से इस विश्वविद्यालय के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। यहाँ १०,००० छात्रों

को पढ़ाने के लिए २,००० शिक्षक थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने ७ वीं शताब्दी में यहाँ जीवन का महत्त्वपूर्ण एक वर्ष एक विद्यार्थी और एक शिक्षक के रूप में व्यतीत किया था। प्रसिद्ध 'बौद्ध सारिपुत्र' का जन्म यहीं पर हुआ था।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम ४५०-४७० को प्राप्त है।[4][5] इस विश्वविद्यालय को हेमंत कुमार गुप्त के उत्तराधिकारियों का पूरा सहयोग मिला। गुप्तवंश के पतन के बाद भी आने वाले सभी शासक वंशों ने इसकी समृद्धि में अपना योगदान जारी रखा। इसे महान सम्राट हर्षवर्द्धन और पाल शासकों का भी संरक्षण मिला। स्थानीय शासकों तथा भारत के विभिन्न क्षेत्रों के साथ ही इसे अनेक विदेशी शासकों से भी अनुदान मिला।

यह विश्व का प्रथम पूर्णतः आवासीय विश्वविद्यालय था। विकसित स्थिति में इसमें विद्यार्थियों की संख्या करीब १०,००० एवं अध्यापकों की संख्या २००० थी। सातवीं शती में जब ह्वेनसाङ आया था उस समय १०,००० विद्यार्थी और १५१० आचार्य नालंदा विश्वविद्यालय में थे। इस विश्वविद्यालय में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से ही नहीं बल्कि कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस तथा तुर्की से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। नालंदा के विशिष्ट शिक्षाप्राप्त स्नातक बाहर जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार करते थे। इस विश्वविद्यालय को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी।

अत्यंत सुनियोजित ढंग से और विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना था। इसका पूरा परिसर एक विशाल दीवार से घिरा हुआ था जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। उत्तर से दक्षिण की ओर मठों की कतार थी और उनके सामने अनेक भव्य स्तूप और मंदिर थे। मंदिरों में बुद्ध भगवान की सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित थीं। केन्द्रीय विद्यालय में सात बड़े कक्ष

थे और इसके अलावा तीन सौ अन्य कमरे थे। इनमें व्याख्यान हुआ करते थे। अभी तक खुदाई में तेरह मठ मिले हैं। वैसे इससे भी अधिक मठों के होने ही संभावना है। मठ एक से अधिक मंजिल के होते थे। कमरे में सोने के लिए पत्थर की चौकी होती थी। दीपक, पुस्तक इत्यादि रखने के लिए आले बने हुए थे। प्रत्येक मठ के आँगन में एक कुआँ बना था। आठ विशाल भवन, दस मंदिर, अनेक प्रार्थना कक्ष तथा अध्ययन कक्ष के अलावा इस परिसर में सुंदर बगीचे तथा झीलें भी थी।

समस्त विश्वविद्यालय का प्रबंध कुलपति या प्रमुख आचार्य करते थे जो भिक्षुओं द्वारा निर्वाचित होते थे। कुलपति दो परामर्शदात्री समितियों के परामर्श से सारा प्रबंध करते थे। प्रथम समिति शिक्षा तथा पाठ्यक्रम संबंधी कार्य देखती थी और द्वितीय समिति सारे विश्वविद्यालय की आर्थिक व्यवस्था तथा प्रशासन की देख-भाल करती थी। विश्वविद्यालय को दान में मिले दो सौ गाँवों से प्राप्त उपज और आय की देख-रेख यही समिति करती थी। इसी से सहस्त्रों विद्यार्थियों के भोजन, कपड़े तथा आवास का प्रबंध होता था।

इस विश्वविद्यालय में तीन श्रेणियों के आचार्य थे जो अपनी योग्यतानुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में आते थे। नालंदा के प्रसिद्ध आचार्यों में शीलभद्र, धर्मपाल, चंद्रपाल, गुणमति और स्थिरमति प्रमुख थे। ७ वीं सदी में ह्वेनसांग के समय इस विश्व विद्यालय के प्रमुख शीलभद्र थे जो एक महान आचार्य, शिक्षक और विद्वान थे।

प्रवेश परीक्षा अत्यंत कठिन होती थी और उसके कारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी ही प्रवेश पा सकते थे। उन्हें तीन कठिन परीक्षा स्तरों को उत्तीर्ण करना होता था। यह विश्व का प्रथम ऐसा दृष्टांत है। शुद्ध आचरण और संघ के नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक था।

इस विश्वविद्यालय में आचार्य छात्रों को मौखिक व्याख्यान द्वारा शिक्षा देते थे। इसके अतिरिक्त पुस्तकों की व्याख्या भी होती थी। शास्त्रार्थ होता रहता था। दिन के हर पहर में अध्ययन तथा शंका समाधान चलता रहता था।

यहाँ महायान के प्रवर्तक नागार्जुन, वसुबन्धु, असंग तथा धर्मकीर्ति की रचनाओं का सविस्तार अध्ययन होता था। वेद, वेदांत और सांख्य भी पढ़ाये जाते थे। व्याकरण, दर्शन, शल्यविद्या, ज्योतिष, योगशास्त्र तथा चिकित्साशास्त्र भी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत थे। नालंदा की खुदाई में मिली अनेक काँसे की मूर्तियो के आधार पर कुछ विद्वानों का मत है कि कदाचित् धातु की मूर्तियाँ बनाने के विज्ञान का भी अध्ययन होता था। यहाँ खगोलशास्त्र अध्ययन के लिए एक विशेष विभाग था।

नालंदा में सहस्रों विद्यार्थियों और आचार्यों के अध्ययन के लिए, नौ तल का एक विराट पुस्तकालय था जिसमें ३ लाख से अधिक पुस्तकों का अनुपम संग्रह था। इस पुस्तकालय में सभी विषयों से संबंधित पुस्तकें थी। यह 'रत्नरंजक' 'रत्नोदधि' 'रत्नसागर' नामक तीन विशाल भवनों में स्थित था। 'रत्नोदधि' पुस्तकालय में अनेक अप्राप्य हस्तलिखित पुस्तकें संग्रहीत थी। इनमें से अनेक पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ चीनी यात्री अपने साथ ले गये थे।

यहां छात्रों के रहने के लिए ३०० कक्ष बने थे, जिनमें अकेले या एक से अधिक छात्रों के रहने की व्यवस्था थी। एक या दो भिक्षु छात्र एक कमरे में रहते थे। कमरे छात्रों को प्रत्येक वर्ष उनकी अग्रिमता के आधार पर दिये जाते थे। इसका प्रबंधन स्वयं छात्रों द्वारा छात्र संघ के माध्यम से किया जाता था।

छात्रों को किसी प्रकार की आर्थिक चिंता न थी। उनके लिए शिक्षा, भोजन, वस्त्र औषधि और उपचार सभी निःशुल्क थे। राज्य की ओर से विश्वविद्यालय को दो सौ गाँव दान में मिले थे, जिनसे प्राप्त आय और अनाज से उसका खर्च चलता था।

१३ वीं सदी तक इस विश्वविद्यालय का पूर्णतः अवसान हो गया। मुस्लिम इतिहासकार मिनहाज़ और तिब्बती इतिहासकार तारानाथ के वृत्तांतों से पता चलता है कि इस विश्वविद्यालय को तुर्कों के आक्रमणों से बड़ी क्षति पहुँची। तारानाथ के अनुसार तीर्थिकों और भिक्षुओं के आपसी झगड़ों से भी इस विश्वविद्यालय की गरिमा को भारी नुकसान पहुँचा। इसपर पहला आघात हुण शासक मिहिरकुल द्वारा किया गया। ११९९ में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इसे जला कर पूर्णतः नष्ट कर दिया।

इस विश्वविद्यालय के अवशेष चौदह हेक्टेयर क्षेत्र में मिले हैं। खुदाई में मिली सभी इमारतों का निर्माण लाल पत्थर से किया गया था। यह परिसर दक्षिण से उत्तर की ओर बना हुआ है। मठ या विहार इस परिसर के पूर्व दिशा में व चैत्य (मंदिर) पश्चिम दिशा में बने थे। इस परिसर की सबसे मुख्य इमारत विहार-१ थी। आज में भी यहां दो मंजिला इमारत शेष है। यह इमारत परिसर के मुख्य आंगन के समीप बनी हुई है। संभवत: यहां ही शिक्षक अपने छात्रों को संबोधित किया करते थे। इस विहार में एक छोटा सा प्रार्थनालय भी अभी सुरक्षित अवस्था में बचा हुआ है। इस प्रार्थनालय में भगवान बुद्ध की भग्न प्रतिमा बनी है। यहां स्थित मंदिर नं. ३ इस परिसर का सबसे बड़ा मंदिर है। इस मंदिर से समूचे क्षेत्र का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। यह मंदिर कई छोटे-बड़े स्तूपों से घिरा हुआ है। इन सभी स्तूपों में भगवान बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं में मूर्तियां बनी हुई है।

नालंदा विश्वविधालय देखने के बाद हमारी आखिरी मंज़िल थी पटना। अब जैसे गर्मी के दिनों के बाद सब बारिश के मौसम का इंतजार करते है। ठीक उसी तरह हम सब विद्यार्थी और हमारे सभी शिक्षक बस पटना पहुंचने का इंतजार कर रहे थे।

हमें पता था कि हम 7:00 बजे तक पटना पहुंचने वाले हैं लेकिन दुर्भाग्य ऐसा हुआ कि हम ट्रैफिक में फस गए और जहां पर हम 7:00 बजे पहुंचने वाले थे वह हमें ट्रैफिक में ही बस में ही 11:00 बज गए थे।और जिस होटल का हमारे लिए इंतजाम किया गया था पटना पहुंचकर रहने के लिए उस होटल के कर्मचारियों द्वारा हमारे साथ बुरा व्यवहार किया जाने की वजह से बुरा व्यवहार यानी कि वह हमारे लिए गाड़ी भेजने के लिए भी तैयार नहीं थे हमारे जो बस के चालक थे उन्हें उस

होटल की जानकारी नहीं थी । तो बस इतना ही उनसे कहा गया था कि वह हमारे लिए किसी को भेजें ताकि हम उस होटल तक पहुंच सके लेकिन उन्होंने यह भी नहीं किया ।इसी वजह से हमें अचानक से होटल बदलना पड़ा और पटना पहुंचते ही हमें एक नए होटल में जाकर रहना पड़ा और उस होटल का नाम था सूर्या विहार। इस होटल की खास बात यह थी कि इस होटल के सामने ही हमारा रेलवे स्टेशन था।

जहां पर हम पहले अपनी सहेलियों के साथ होटल में रहना चाहते थे लेकिन अब थकान इतनी थी कि हम किसी के साथ भी रहने के लिए तैयार थे। और अब हमारे साथ हुआ यह कि हमें पहले नीचे वाला कमरा जो है वह दिया गया था और उस कमरे में मैं ऐश्वर्या योगिता और रेखा रहने वाले थे लेकिन फिर भी हमारी शिक्षिका ने कहा कि उन्हें वह कमरा चाहिए इसलिए हमें ऊपर वाले कमरे में भेज दिया गया । ऊपर वाले कमरे में जहां पर 3 लोग असल में रहने वाले थे उस कमरे में हम छह से सात लोग रहने के लिए तैयार हो गया और यह भी एक बहुत ही उम्दा अनुभव था।

अपने दोस्तों के कमरे में रहना यह शेफाली निधि, अलावा नए लोगों के साथ भी बहुत अच्छा था। रेखा, रुखसाना यह मेरे लिए उस दिन नए थे लेकिन मजा बहुत आया। उस कमरे में रहने के लिए।सबसे मजेदार बात तो यह थी कि हम उस दिन रात 1:00 बजे हमारा रात का भोजन करने वाले थे।

भोजन के बाद बिना नहाए हम वैसे ही सो गए और सभी ने यही निर्णय लिया कि हम सब सुबह नहाएंगे। तो जैसे यह सुबह हो गई होटल के कमरे में गर्म पानी आने से रहा इसीलिए मैं हमारा कमरा छोड़ ,मेरे दोस्त जो नीचे वाले कमरे में थे, समीक्षा उनके कमरे में मैं चली गई और ठंडे ठंडे वातावरण में ठंडे ठंडे पानी से नहाने का अनुभव भी मैंने कर लिया था।

नहा धोकर तैयार होकर अपना सामान भी सब भरकर हम होटल से रवाना हुए रेलवे स्टेशन के

लिए। पटना से गोवा जाने वाली मांडवी एक्सप्रेस जब आए तब हम सब उस ट्रेन में चढ़ गए लेकिन इस बार हुआ यह कि सब की सीट अलग अलग हो गए ।सब लोग अलग अलग डिब्बे में पड़ गए और हम एक ऐसा डिब्बा मिला जहां पर केवल हम 6 लड़कियां और हमारे साथ द्वितीय वर्ष का एक विद्यार्थी प्रशांत था।

एक अच्छी बात यह थी कि हमारे साथी लगातार हमसे मिलने के लिए आ रहे थे। हमारे शिक्षक हमसे मिलने के लिए आ रहे थे। ट्रेन में बैठकर जिसे ट्रेन चलने लगी है 3:30 बजे के आसपास भोजन भी करके, जो हमने होटल से पहले ले लिया था ट्रेन में खाने के लिए। क्योंकि ट्रेन का खाना हमें उतना अच्छा नहीं लगता और भोजन करने के बाद जो कि हमारा गला खराब हो रहा था तो समीक्षा को सर्दी जुकाम की दवाई देकर मैं खुद भी दवाई लेने वाली थी ।और पता नहीं कैसे मैंने वह दवाई कुछ ज्यादा पी ली जिसकी वजह से मैं 2 दिन नींद में ही रही और 3:30 बजे जो मैं सोई थी वह मैं अगले दिन 9:00 बजे जाग गए और इस पूरे दिन में क्या हुआ या मुझे कुछ पता ही नहीं था । अगले दिन मेरे दोस्तों ने मुझे बताया जो भी हुआ उस दिन में एक बहुत ही अजीब सा अनुभव रहा मेरे जीवन का यहां पर मैं दवाई लेकर सो गई थी।

उस दवा का असर मुझ पर से गया नहीं था ।उस दिन नींद आना हमारे लिए बहुत ही कठिन था क्योंकि सुबह सुबह हम 6:00 बजे के आसपास गोवा पहुंचने वाले थे। अपने घर जाने वाले थे और अपने घर वालों से मिलने वाले थे। उत्सुकता कुछ ज्यादा ही बढ़ गई थी ।11 दिन अपने घर वालों से दूर अपने घर से दूर अपने शहर से दूर रहना उतना आसान नहीं था। और मेरे मन में तो बस यही चल रहा था कि कब सुबह होगी, कब ६ बजेंगे और कब हम अपने गोवा पहुंचेंगे । वक्त जैसे जा ही नहीं रहा था और मैं वक्त को ही देखते चले जा रही थी। जैसे-तैसे सुबह होती चली गई तब हमारे सारे दोस्त जो है वह उठ गए लेकिन फिर पता चला कि हमारी रेलगाड़ी एक दो घंटा देरी से चल रही है।यह बात सुनते ही मन थोड़ा और बैठ गया क्योंकि हमें और ज्यादा इंतजार करना पड़ता। गोवा पहुंचने के लिए यह हुआ ही था कि फिर एक स्टेशन पर जाकर हमें रुकना पड़ा और फिर वहां में देर हुई और ऐसे करते हुए 8:00 बजे के आसपास हम गोवा पहुंच ही गए।

जो कि गोवा में थिविम रेलवे स्टेशन पर हमें उतरना था और इस रेलवे स्टेशन पर लगभग 3 मिनट या फिर 2 मिनट तक की रेल गाड़ी रुकने वाली थी। और इस 3 मिनट के अंदर हमें अपने सारा सामान लेकर उतरना था और यह भी एक बहुत बड़ा कार्य था ।इसीलिए हम रेलवे स्टेशन पहुंचने से पहले ही शायद सावंतवाड़ी पहुंचने पर यह हम दरवाजे पर खड़े हो गए थे और किसी तरह हम थिविम रेलवे स्टेशन पर उतर गए और वह खुशी जो हमारे चेहरे पर थिविम रेलवे स्टेशन पर पहुंच कर आई थी उस खुशी की किसी के साथ भी तुलना नहीं की जा सकती है।

सभी के घर वाले उन्हें लेने के लिए आए थे और हम सब फिर घर जाने के लिए उत्सुक होते थे ।

आराम करना तो हम चाहते थे लेकिन सबसे ज्यादा हम ने अपने घर, अपने घर वालों को और गोवा के खाने को बहुत ज्यादा याद किया था और सभी ने यही निर्णय लिया था कि हम घर जाकर पहले तो सोएंगे ,नहाएंगे और फिर अच्छा-अच्छा खाना खाएंगे।

मेरी दोस्त समीक्षा के पिता उसे लेने के लिए आए थे और समीक्षा के साथ ही मैं, भी अपने घर आ गए ।उन्होंने मुझे अपने घर छोड़ा और वे चले गए। हां, बहुत ज्यादा हम थके हारे थे लेकिन खुशी इस बात की थी कि हम अपने साथ अपने ढेर सारे सामान के साथ बनारस से जुड़ी ढेर सारी यादें भी लेकर लौटी थी। ढेर सारा अनुभव भी हमने कमाया था जो शायद पुस्तकें पढ़कर हमें कभी नहीं मिलता।

नाम: रूफिला सनादि

कक्षा : स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष

आ.क्र : १६

विषय : हिंदी प्रदेशों में भ्रमण